



प्रतिबिम्ब



त्रैमासिक राजभाषा पत्रिका

अंक : अक्टूबर-दिसंबर 2025



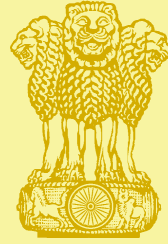
पूर्व रेलवे, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

पूर्व रेलवे में वंदे भारत स्लीपर एवं अमृत भारत एक्सप्रेस के शुभारंभ के विहंगम दृश्य





मिलिन्द देऊस्कर
महाप्रबंधक
Milind Deouskar
GENERAL MANAGER



सत्यमेव जयते

पूर्व रेलवे
महाप्रबंधक कार्यालय
17, नेताजी सुभाष रोड
कोलकाता-700 001
EASTERN RAILWAY
Office of General Manager
17, Netaji Subhas Road
Kolkata-700 001



शुभकामना संदेश

प्रिय रेल परिवार,

नववर्ष 2026 के पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह नया वर्ष आपके जीवन में सुख, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि लेकर आए, यही मेरी कामना है।

राजभाषा पत्रिका 'प्रतिबिंब' के नए अंक के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। राजभाषा पत्रिका हमारे संगठन की सांस्कृतिक और भाषाई अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। पूर्व रेलवे सदैव प्रगति और सेवा के पथ पर अग्रसर रही है। मुझे विश्वास है कि इस नए वर्ष में भी हम सभी मिलकर संगठन के कामकाज में हिंदी भाषा के प्रयोग को और अधिक व्यापक बनाएँगे।

नववर्ष का आगमन हमें नए संकल्प और नई उपलब्धियों की ओर प्रेरित करता है। आइए, हम सब मिलकर हिंदी को जन-जन की भाषा बनाने का संकल्प लें।

'प्रतिबिंब' के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(मिलिन्द देऊस्कर)
महाप्रबंधक



परमानन्द शर्मा
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी
PERMANAND SHARMA
Principal Chief Mechanical Engineer
&
Mukhya Rajbhasha Adhikari



सत्यमेव जयते

पूर्व रेलवे
17, नेताजी सुभाष रोड
कोलकाता-700 001
EASTERN RAILWAY
17, Netaji Subhas Road
Kolkata-700 001



मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से.....

प्रिय साथियो,

नववर्ष 2026 के पावन अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। नया वर्ष आपके जीवन में सुख, शांति, स्वास्थ्य और सफलता लेकर आए। नववर्ष में 'प्रतिबिंब' का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर हर्ष हो रहा है।

राजभाषा हिंदी हमारी सांविधानिक जिम्मेदारी है। जब हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करते हैं, तो यह केवल भाषा का उपयोग नहीं होता, बल्कि जन-जन तक जुड़ने का एक माध्यम बन जाता है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारा सुझाव है कि कार्यालय में अधिकांश कामकाज यथा पत्राचार, नोटिंग, संवाद आदि हिंदी में किए जाएं। इसके अतिरिक्त, अधिक से अधिक कार्मिकों को हिंदी भाषा प्रशिक्षण, हिंदी कार्यशाला आदि के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाए तथा उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाए। व्यक्तिशः आदेश जारी किये गए प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों के कार्य की मात्रा शत-प्रतिशत हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

पूर्व रेलवे मुख्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रतिबिंब' का नियमित प्रकाशन भी हिंदी के प्रयोग-प्रसार का एक प्रमुख माध्यम है जो अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक सृजनात्मक अभिव्यक्ति उजागर करने का एक मंच प्रदान करता है।

राजभाषा का प्रचार-प्रसार हमारी प्रतिबद्धता है। आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएँगे और इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएँगे।

शुभकामनाओं सहित।


 (परमानन्द शर्मा)
 मुख्य राजभाषा अधिकारी

विक्रम सिंह
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
Vikram Singh
Dy. General Manager (Rajbhasha)



पूर्व रेलवे
17, नेताजी सुभाष रोड
कोलकाता-700 001
EASTERN RAILWAY
17, Netaji Subhas Road
Kolkata-700 001



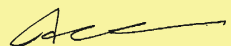
संपादकीय

नववर्ष, 2026 की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ 'प्रतिबिंब' का नया अंक आप सभी के साथ साझा करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है।

वर्ष 2025 पूर्व रेलवे के राजभाषा कार्यों के लिए एक उल्लेखनीय वर्ष रहा। वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में पत्राचार करने हेतु प्रोत्साहित किया गया, जिससे कार्यालयीन कार्यों में हिंदी प्रयोग का प्रतिशत उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। ई-ऑफिस एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है। गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार पूरे वर्ष नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ तथा हिंदी निबंध, वाक् एवं टिप्पण व प्रारूप लेखन आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी पखवाड़ा और हिंदी दिवस पर हिंदी नाटक सहित विविध कार्यक्रम आयोजित किये गए जिनमें कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक दक्षता को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा पत्रिकाओं का नियमित रूप से प्रकाशन किया गया।

पिछले वर्ष सितम्बर माह में माननीय सांसद श्री भर्तृहरि महताब की अध्यक्षता में संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा पूर्व रेलवे मुख्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया तथा कोलकाता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय 1) के एक सदस्य के रूप में इस कार्यालय में राजभाषा नीति का प्रयोग व कार्यान्वयन कार्य संतोषजनक पाया गया। यह एक समेकित प्रयास का परिणाम है। हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किसी भाषा का विकास तभी संभव है जब उसका निरंतर और सहज रूप से प्रयोग किया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने कार्यक्षेत्र, संवाद और लेखन में हिंदी को प्राथमिकता दें। हम राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के प्रति प्रतिबद्ध हैं और हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

आइए, इस अंक के माध्यम से हम सब मिलकर संकल्प लें कि हिंदी को केवल राजभाषा ही नहीं, बल्कि जन-जन की भाषा बनाने की दिशा में सार्थक कदम बढ़ाएँ।


(विक्रम सिंह)
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. मधुसूदन दत्त
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
Dr. Madhusoodan Datta
Sr. Rajbhasha Adhikari



पूर्व रेलवे
17, नेताजी सुभाष रोड
कोलकाता-700 001
EASTERN RAILWAY
17, Netaji Subhas Road
Kolkata-700 001



उप-संपादकीय

प्रिय पाठक,

नववर्ष, 2026 की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ 'प्रतिबिंब' का यह नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। प्रशासनिक व्यवस्था में हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। राजभाषा पत्रिका का उद्देश्य इसी भावना को जीवित रखना है ताकि हम न केवल हिंदी में कार्य करें बल्कि उसे सहजता से अपनाएँ। यह पत्रिका सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती है।

पूर्व रेलवे सदैव राजभाषा हिंदी के संवर्धन और प्रसार के लिए प्रतिबद्ध रही है। पिछले वर्षों में पूर्व रेलवे ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। कार्यालयीन पत्राचार में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ा है, जिससे कार्यप्रणाली अधिक सहज हुई है। विभिन्न विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन की सक्रियता ने कर्मचारियों को प्रेरित किया है कि वे दैनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग करें। प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के माध्यम से कर्मचारियों को तकनीकी एवं प्रशासनिक शब्दावली का हिंदी रूप समझाया गया है। इससे न केवल दक्षता बढ़ी है, बल्कि हिंदी में कार्य करने का आत्मविश्वास भी विकसित हुआ है।

राजभाषा पत्रिका का उद्देश्य केवल लेखन और प्रकाशन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम भी है। इसमें प्रकाशित लेख, कविताएँ, आलेख और विचार न केवल भाषा की समृद्धि को दर्शाते हैं, बल्कि पाठकों को प्रेरित भी करते हैं ताकि वे हिंदी को अपने दैनिक जीवन में और अधिक अपना सकें।

आइए, राजभाषा के प्रति हम अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखें और रचनाओं के माध्यम से इसके विकास और प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देते रहें।


(डॉ. मधुसूदन दत्त)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी



प्रतिबिंब

वर्ष : 2025 अंक : अक्टूबर-दिसंबर

राजभाषा विभाग
पूर्व रेलवे, प्रधान कार्यालय

संरक्षक

मिलिन्द देऊस्कर

महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

परमानन्द शर्मा

मुख्य राजभाषा अधिकारी

एवं

प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

संपादक

विक्रम सिंह

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

उप-संपादक

डॉ. मधुसूदन दत्त

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सह-संपादक

श्री बिजेश कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवादक

फोटोग्राफी सहयोग

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय

पत्राचार का पता

संपादक, प्रतिबिंब,

पूर्व रेलवे, प्रधान कार्यालय

17, नेताजी सुभाष रोड,

कोलकाता - 700001



22224171 (रेलवे),

(033)-22133361 (डीओटी)

अपनी रचना ई-मेल से भी भेज सकते हैं -
e-mail : dgmrrrhq@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगा।

निःशुल्क वितरण हेतु

अनुक्रमणिका

रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1. नेताजी सुभाष चंद्र बोस का देश-प्रेम	डॉ. मधुसूदन दत्त	2
2. सरकारी कार्यालयों में हिंदी की अनिवार्यता एवं प्रासंगिकता	अभिषेक कुमार प्रसाद	3
3. करुणा सागर	कौस्तुभ दासगुप्ता	4
4. मजदूर	नीलम चंद्रा	5
5. आशियाना	के. वी. आर. मूर्ति	5
6. राजभाषा का आशय	अजय कुमार	6
7. कर्मफल	नीरज जायसवाल	7
8. पूर्वांचल एक्सप्रेस में एक शाम और एक टीटीई की सच्ची कहानी	बेला कश्यप	8
9. सुनहरे जंगल की सीख	बिजेश कुमार सिंह	9
10. सागर संगम की ओर : एक अविस्मरणीय यात्रा	संजय प्रसाद	10
11. जीवट इंसान	सुषमा मिंज	12
12. पटरियों के बीच एकल उत्तरदायित्व	दीपक कुमार	14
13. सोहनलाल की योग्यता	प्रमोद कुमार सिंह	15
14. समीक्षा	सोमप्रभा तिवारी 'नूर'	16
15. न्यायोचित दण्ड	प्रभाष चंद्र मिश्रा	17
16. अरावली - मरु प्रदेश का रक्षक	इन्द्रज्योति रॉय	19
17. सपने खुली आंखों के	सूरज ठाकुर	20
18. जरूरत और शांति	शिव प्रसाद साव	21
19. यस मैडम	विमल कुमार राव	23
20. गंगा डॉल्फिन	कृष्णानन्द चौरसिया	24
21. अति सर्वदा वर्जते	शिवांश त्रिपाठी	26
22. भारतीय रेलवे	मुकेश कुमार	27
23. सर्वोत्कृष्ट करियर : बाबा बनना	प्रभाष कुमार	28

रचनाकारों से अनुरोध

प्रकाशन सामग्री एवं प्रतिक्रियाएँ राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय, पूर्व रेलवे में व्यक्तिशः डाक द्वारा अथवा ई-मेल पते dgmrrrhq@gmail.com पर प्रेषित की जा सकती हैं। रचनाएँ सीमित पृष्ठ में हस्तलिखित/यूनीकोड में टंकित एवं छायाचित्र स्कैन कर हार्ड/सॉफ्ट प्रति में मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण-पत्र (विधिवत हस्ताक्षर सहित) के साथ प्रेषित की जानी अपेक्षित हैं।



नेताजी सुभाष चंद्र बोस का देश-प्रेम

डॉ. मधुसूदन दत्त
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
पूर्व रेलवे, कोलकाता

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 129वीं जयंती कल मनाई गई। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारत के उन महान स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल हैं, जिनसे आज के दौर का युवा वर्ग प्रेरणा लेता है। देश के स्वाधीनता आंदोलन के नायकों में से एक नेताजी की जीवनी उनके विचार और उनका कठोर त्याग आज के युवाओं के लिए बेहद प्रेरणादायक है। भारत सरकार नेताजी के जन्मदिन को वर्ष 2021 से पराक्रम दिवस के तौर पर मना रही है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा बंगाल डिवीजन के कटक में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और मां का नाम प्रभावती था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे। प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 संतानें थीं जिनमें 6 बेटियां और 8 बेटे थे, सुभाष चंद्र उनकी 9वीं संतान और 5वें बेटे थे। नेताजी की प्रारंभिक पढ़ाई कटक के एलिवेशन कॉलेजिएट स्कूल में हुई। इसके बाद उनकी शिक्षा कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई। तत्पश्चात् भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने उनको इंग्लैंड के केंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया। 1920 में उन्होंने इंग्लैंड में सिविल सर्विस परीक्षा पास की लेकिन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेने के लिए उन्होंने जॉब छोड़ दी। सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वह देश को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद कराने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। जालियांवाला बाग हत्याकांड की घटना से वह काफी विचलित हुए। कांग्रेस में महात्मा गांधी उदार दल का नेतृत्व करते थे तो वहीं सुभाष चंद्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे, इसलिए नेताजी गांधीजी के विचारों से सहमत नहीं थे हालांकि दोनों का मकसद सिर्फ और सिर्फ एक था कि भारत को आजाद कराया जाए। साल 1938 में नेताजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित किए गए, जिसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन

किया। 1940 के कांग्रेस अधिवेशन में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने गांधी जी के समर्थन में खड़े पड़ाभी सीतारमैया को हराकर विजय प्राप्त की। इस पर गांधीजी और सुभाष चंद्रजी के बीच अनबन बढ़ गई जिसके बाद नेताजी ने खुद ही कांग्रेस को छोड़ दिया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने साल 1937 में अपनी सेक्रेटरी एमिली से शादी की। दोनों की एक बेटी अनीता हुई और वर्तमान में वह जर्मनी में अपने परिवार के साथ रहती है। अंग्रेजों से भारत को आजाद कराने के लिए नेताजी ने 21 अक्टूबर 1943 को आजाद हिंद सरकार की स्थापना करते हुए आजाद हिंद फौज का गठन किया। इसके बाद सुभाष चंद्र बोस अपनी फौज के साथ 4 जुलाई 1944 को बर्मा (अब म्यांमार) पहुंचे। यहीं उन्होंने नारा दिया **तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा**। 1921 से 1941 के दौरान वह पूर्ण स्वराज के लिए कई बार जेल भी गए। उनका मानना था कि अहिंसा के जरिए स्वतंत्रता नहीं पाई जा सकती। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने सोवियत संघ, नाजी जर्मनी, जापान जैसे देशों की यात्रा की और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सहयोग मांगा। सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद रेडियो स्टेशन जर्मनी में शुरू किया और पूर्वी एशिया में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया। सुभाष चंद्र बोस प्रेरणा का मुख्य जरिया भगवद्गीता को मानते थे। 18 अगस्त 1945 को हुई एक विमान दुर्घटना के बाद नेताजी लापता हो गए। घटना को लेकर तीन जांच आयोग बैठे जिनमें से दो ने दावा किया कि दुर्घटना के बाद नेताजी की मृत्यु हो गई थी; जबकि न्यायमूर्ति एन.के. मुखर्जी की अध्यक्षता वाले तीसरे जांच आयोग का दावा था कि घटना के बाद भी नेताजी जीवित थे। इस विवाद ने उनके परिवार के सदस्यों के बीच भी विभाजन ला दिया। 2016 में प्रधानमंत्री मोदीजी ने सुभाष चंद्र बोस से जुड़ी 100 गोपनीय फाइलों का डिजिटल संस्करण सार्वजनिक किया। यह दिल्ली स्थित राष्ट्रीय अभिलेखागार में मौजूद है।



सरकारी कार्यालयों में हिंदी की अनिवार्यता एवं प्रासंगिकता

अभिषेक कुमार प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे, सियालदह

अपने बाल काल से ही मैंने कहावत सुनी थी - 'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी' जिसका तात्पर्य है हर थोड़ी दूरी पर पानी का स्वाद या प्रकार बदल जाता है और हर चार किलोमीटर पर भाषा या बोलने का तरीका बदल जाता है। भाषायी दृष्टि से भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। इस विविधता के बीच प्रशासनिक कार्यों में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जो अधिकतम नागरिकों को जोड़ सके।

ऐसे में केवल एक ही भाषा है हिंदी, जो भारत की राजभाषा है और इस आवश्यकता को प्रभावी रूप से पूरा करती है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी की अनिवार्यता न केवल संवैधानिक दृष्टि से उचित है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है। यदि सांविधिक तौर पर देखा जाए तो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को देवनागरी लिपि में संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि प्रशासनिक कार्य एक ऐसी भाषा में हो जिसे देश का बड़ा वर्ग समझ सके। अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा की तुलना में हिंदी हम भारतीयों के अधिक निकट है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से जनता और प्रशासन के बीच संवाद सरल, सहज और प्रभावी होता है।

सरकारी कार्यालयों का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा करना है। यदि सरकारी आदेश, सूचनाएँ, आवेदनपत्र और नियम-कानून ऐसी भाषा में हों जिसे आम नागरिक समझ सके, तो उनकी पहुँच और उपयोगिता बढ़ जाती है। हिंदी में कार्य होने से ग्रामीण क्षेत्रों, किसानों, श्रमिकों और सामान्य जनता को अपने अधिकारों और कर्तव्यों की सही जानकारी मिलती है। इससे पारदर्शिता बढ़ती है और प्रशासन पर लोगों का विश्वास सुदृढ़ होता है।

हिंदी की प्रासंगिकता राष्ट्रीय एकता और अखंडता के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। यह देश के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने का कार्य करती है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग एक साझा भाषाई

मंच प्रदान करता है, जिससे आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा मिलता है। यह भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और मूल्यों की वाहक भी है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में प्रायः यह तर्क सुनने को मिलता है कि अंग्रेजी अधिक उपयोगी और प्रभावशाली भाषा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अंग्रेजी का अंतर्राष्ट्रीय महत्व है, किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि हिंदी की उपेक्षा की जाए। वास्तव में, सशक्त राष्ट्र वही होता है जो अपनी भाषा को सम्मान देता है। जापान, फ्रांस और चीन जैसे देश अपनी मातृभाषा में प्रशासनिक कार्य करते हुए भी वैश्विक स्तर पर अग्रणी हैं। इसी प्रकार भारत भी हिंदी को सुदृढ़ बनाकर प्रशासनिक दक्षता प्राप्त कर सकता है।

सरकारी कार्यालयों में हिंदी की अनिवार्यता कर्मचारियों के लिए भी लाभकारी है। इससे कार्य में स्पष्टता आती है, भ्रम की स्थिति कम होती है और निर्णय प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है। साथ ही, हिंदी में कार्य करने से अनुवाद पर होने वाला अनावश्यक व्यय भी कम किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी हिंदी अब पीछे नहीं है; ई-गवर्नेंस, डिजिटल पोर्टल और सॉफ्टवेयर हिंदी में उपलब्ध हो रहे हैं, जिससे इसका प्रयोग और भी सरल हो गया है।

अंततः कहा जा सकता है कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी की अनिवार्यता समय की मांग है। यह न केवल प्रशासन को जनोन्मुखी बनाती है, बल्कि लोकतंत्र को भी सशक्त करती है। हिंदी की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी स्वतंत्रता के समय थी। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम इसे औपचारिकता तक सीमित न रखें, बल्कि व्यवहार में भी पूरी निष्ठा से अपनाएँ। तभी एक सशक्त, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण संभव हो सकेगा।

‘हिंदी है प्रासंगिक
जन-जन की यह भाषा है,
चलो करें प्रचार-प्रसार हम इसका
राष्ट्रीय एकता की यह आशा है।’



करुणा सागर

कौस्तुभ दासगुप्ता

वरिष्ठ अनुवादक, द.पू. रेलवे, मुख्यालय

करुणा सागर के विदाई समारोह में उनकी उत्कृष्ट, अनुपम और अनुकरणीय सेवा के बारे में सभी अधिकारी और वरिष्ठ सहकर्मी प्रशंसा के पुल बांध रहे थे। पैंतीस वर्षों की लंबी सेवा के बाद करुणा अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हो रही थीं। मंच पर सजा टेबल पुष्प गुच्छ, उपहार और स्मृति चिह्नों से भर गया था। जब भी कोई करुणा और उनकी सेवाओं की सराहना करते तो ऑडिटोरियम तालियों से गूंज उठता और दर्शकों के बीच विराजमान प्रोफेसर साहब खुशी और गर्व से भर जाते।

समारोह के संचालक ने करुणा जी को उनके सेवाकालीन अनुभवों को साझा करने के लिए पोज़ियम के माइक पर आने का अनुरोध किया। सभी अधिकारियों और अपने सहकर्मियों को संबोधित करने के बाद करुणा को यकायक अस्पताल की वह पहली रात याद आ गई जब उन्हें इस सरकारी अस्पताल में नौकरी करने का पहला मौका मिला था। वह कहने लगी- 'प्राइवेट अस्पताल की लंबी-लंबी थकान भरी शिफ्ट और सीमित सैलरी के बाद यहां आकर मुझे बहुत खुशी हो रही थी। उन दिनों सैलरी प्राइवेट अस्पताल की तुलना में दो गुणा थी। सबसे बड़ी बात, रेलवे के विशाल परिवार से जुड़ने पर मुझे गर्व की अनुभूति हो रही थी। इस अस्पताल ने मुझे बहुत कुछ दिया है। पैसा, नाम, सम्मान, विशिष्ट पहचान और मेरे पतिदेव जो दर्शकों के बीच बैठे हैं वह भी इसी अस्पताल की ही देन हैं।' कुछ निगाहें ऑडिटोरियम की भीड़ में उस अजनबी शख्स को ढूंढने लगीं जिनका उल्लेख करुणा ने किया था।

करुणा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा- 'एक विशाल बड़े केंद्रीय अस्पताल के विभिन्न वार्डों में, तरह-तरह के रोगियों की सेवा मेरी लिए एक चुनौती थी। किन्तु मुझे अपने मनोबल और अपनी शिक्षा-दीक्षा पर पूरा विश्वास था। मैं जोश और उत्साह से भरी हुई थी।

मैंने तय कर लिया था कि मैं अपनी नर्सिंग के कौशल से खुद को सक्षम साबित करते हुए, हर प्रकार की चुनौतियों का न केवल सामना करूंगी बल्कि रोगियों को नर्सिंग देखभाल से स्वस्थ बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाऊंगी। अनुशासन और समर्पण के दो गुण मैंने 'लेडी विद द लैम्प' की जीवनी से प्रेरित होकर नर्सिंग के शुरूआती दिनों से ही अपना लिए थे। मानव सेवा, माधव सेवा की भावना हमेशा दिल में बनी रहती।

उस दिन परिस्थितियां कुछ ऐसी बनीं कि पहली ड्यूटी के लिए रिपोर्ट करने पर नर्सिंग इंचार्ज प्रिया दीदी ने मुझे मेल मेडिकल वार्ड में रात की पारी की ड्यूटी रात के 21.00 बजे से अगले दिन सुबह 07.00 बजे तक करने को कहा। वार्ड में अधिकांश हृदय रोग से पीड़ित रोगी थे। सीनियर सिस्टर मैरी गोम्स के बच्चे की तबीयत अचानक बिगड़ जाने के कारण मुझे रात की पारी अकेले संभालनी पड़ी। वार्ड बॉय ने मुझे डरा दिया था कि दीदी! रात में अपने केबिन में ही रहना, वार्ड में राउंड पर मत जाना क्योंकि इस वार्ड में कुछ तो है। रात को तरह-तरह की आवाजें आती हैं, कभी सिसकियों की, कभी कराहने की, कभी रोने की तो कभी किसी के चलने की।

सभी रोगियों का रक्तचाप, ज्वर आदि की रूटीन जांच कर उन्हें उनकी दवाइयां देते-देते रात के ग्यारह बज गये थे। मैंने अपना भोजन किया। रात गहराने लगी थी। सारी कायनात में सन्नाटा छा गया था। इंसान और जानवर सभी नींद की आगोश में चले गए थे। वार्ड बॉय, पता नहीं कब, कहीं चला गया था। खिड़की की ओर से किसी के रोने की आवाजें आने लगी थीं। मुझे वार्ड बॉय की बात का यकीन होने लगा था। हिम्मत जुटाकर मैंने खिड़की के बाहर टार्च की रोशनी की, तो दो चमकती आंखें दिखाई दीं और अगले ही क्षण वहां कुछ भी नहीं था। धप से किसी चीज के गिरने की आवाज मेरे कानों

शेष पृष्ठ 25 पर



मज़दूर...

नीलम चंद्रा
मुख्य विद्युत कर्षण अभियंता
पू. रे., मुख्यालय

न मैंने कुछ कही,
न पसीने की आवाज़ सुनी-
वो भी एक काम था, कर आया !

नहीं जानता किसके लिए
मैंने वो महल बनाया;
नहीं जानता किसके लिए
मैंने अपना खूँ-पसीना बहाया --
वो भी एक काम था, कर आया !

न मेरे कोई दिन हैं,
न मेरी हैं कोई रातें-
दो जून रोटी की खातिर जीता हूँ।
अपनी तमन्नाएं, उम्र के किसी छोर पर,
मैं कभी छोड़ आया !

“अंग्रेजी यहाँ दासी या अतिथि
के रूप में रह सकती है, बहुरानी
के रूप में नहीं।”

- फादर कामिल बुल्के

आशियाना

के. वी. आर. मूर्ति

मुझ पर विश्वास करो जरा
मैंने कभी किसी से प्यार नहीं किया
कभी और से नहीं कर सकता अब
तेरे सीने में मेरी धड़कन बसी है,
आज का सच यही है।
मैं औरों की तरह बेवफा नहीं हूँ
जो तुझे मज़धार में छोड़ दूँ यूँ ही।
मैं अमर थोड़ी न हूँ
जो सदियों तक जिन्दा रहूँ।
मालूम है मुझे, मेरी जान,
मुझे त्यागना एक दिन ये प्राण।
ये वादा रहा मेरा
मेरे मिटने से पहले
तेरे सपनों का आशियाना होगा पूरा।
मेरे जाने के बाद भी रहूँगा मैं
ख्याल बनकर तेरे जहाँ में
और तस्वीर बनकर
तेरे आशियाने की किसी दीवार पर,
सपना जो तुमने देखा अपने आशियाने का
उसे पूरा किये बिना मैं विदा नहीं हो पाऊँगा
वादा रहा ये मेरा कि
तेरा आशियाना पूरा करूँगा
और तेरे लिए अमर बन जाऊँगा।
तेरे लिए अमर बन जाऊँगा।



राजभाषा का आशय

अजय कुमार

वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय, पू.रे.

राजभाषा, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, वह भाषा है जिसे सरकारी कामकाज में उपयोग के लिए मान्यता प्राप्त होती है। भारत में हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया गया है और इसका उपयोग केंद्र सरकार के दफ्तरों और कार्यों में किया जाता है। भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है और यह भारतीय संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में कार्य करती है। साथ ही, अंग्रेजी को भी सहायक राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

राजभाषा का महत्व

1. संविधान में प्रावधान : भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित किया गया है। इसके अलावा, संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों में राजभाषा के प्रयोग के लिए दिशानिर्देश दिए गए हैं। हिंदी को संविधान में एक प्रमुख स्थान प्राप्त है और इसे केंद्र सरकार की कार्यवाही में प्रमुख भाषा के रूप में मान्यता दी गई है।

2. राष्ट्रीय एकता और अखंडता : हिंदी, एक राष्ट्रभाषा के रूप में भारत की विविधता में एकता का प्रतीक है। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन हिंदी ने देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को जोड़ने का कार्य किया है। यह देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में मदद करती है, क्योंकि यह एक आम भाषा के रूप में लोगों को संवाद करने का अवसर प्रदान करती है।

3. सरकारी कार्यों में सरलता : हिंदी के माध्यम से सरकारी कार्यों को सरल और सुलभ बनाया जा सकता है। जब नागरिकों को सरकारी दस्तावेज़, आदेश या निर्देश हिंदी में मिलते हैं, तो वे उन्हें अधिक आसानी से समझ सकते हैं। इस तरह राजभाषा सरकार और जनता के बीच संवाद को सरल बनाती है।

राजभाषा के प्रयोग के लाभ

1. लोकप्रियता और समझ : हिंदी अधिकांश भारतीय जनता की भाषा है, और इसके माध्यम से सरकार का

संदेश अधिक प्रभावी रूप से जनता तक पहुँचता है। सरकार की कई योजनाओं और नीतियों को हिंदी में प्रसारित करना लोगों को उनसे जोड़ने में मदद करता है।

2. व्यावसायिक और प्रशासनिक कार्यों में सहूलियत: हिंदी के प्रयोग से प्रशासनिक कार्यों में अधिक सहजता आती है। विशेष रूप से छोटे शहरों और गांवों में हिंदी बोलने वाले लोग सरकारी दस्तावेज़ों को समझने में आसानी महसूस करते हैं। इससे प्रशासन और नागरिकों के बीच संचार में सुधार होता है।

3. शिक्षा के क्षेत्र में योगदान : शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने से छात्र-छात्राओं को अपनी पाठ्य पुस्तकों और अन्य शैक्षिक सामग्री को समझने में सहायता मिलती है। खासकर उन छात्रों के लिए, जो हिंदी को अपनी मातृभाषा मानते हैं, यह उन्हें सीखने में अधिक मदद करती है।

राजभाषा नीति और इसकी चुनौतियाँ

भारत सरकार ने हिंदी को प्रमुख राजभाषा बनाने के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं। इसके तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न कदम उठाए गए हैं, जैसे कि सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रयोग, शिक्षा संस्थानों में हिंदी पाठ्यक्रम की अनिवार्यता और विभिन्न मीडिया चैनलों पर हिंदी को बढ़ावा देना।

हालाँकि, हिंदी के प्रयोग में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। भारत में कई क्षेत्रीय भाषाएँ प्रचलित हैं और हिंदी को सभी क्षेत्रों में समान रूप से अपनाया नहीं गया है। दक्षिण भारत में विशेष रूप से लोग हिंदी को नकारते हैं और अपनी मातृभाषाओं में ही अधिक सहज महसूस करते हैं। इस कारण, हिंदी के प्रचार-प्रसार में कभी-कभी भिन्नताएँ उत्पन्न होती हैं।

निष्कर्ष

राजभाषा हिंदी का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और यह देश की एकता को मजबूत बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि, इसके



प्रयोग में विभिन्न चुनौतियाँ हैं, फिर भी यह हिंदी के प्रसार में निरंतर सुधार और बदलाव की आवश्यकता को दर्शाता है। जब तक भारतीय नागरिकों को अपनी भाषाओं में प्रशासनिक और सरकारी कार्यों से जुड़ी जानकारी नहीं मिलती, तब तक एक मजबूत और

प्रभावी राजभाषा नीति की आवश्यकता बनी रहती है।

राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रभाव समय के साथ और भी बढ़ेगा, जब इसमें सभी भारतीयों की भागीदारी सुनिश्चित होगी और यह उनकी आवश्यकता और समझ के अनुसार आगे बढ़ेगी।

कर्मफल

नीरज जायसवाल

कनिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे, कारखाना/काँचरापाड़ा

धरती पर जितने भी प्रकार के जीव-जंतु जन्म लिए हुए हैं सबकी अपनी एक आयु है तथा उनके द्वारा अतीत में भोगे गए कर्मों के आधार पर ही उन्हें वर्तमान में यह जीवन मिला हुआ है। अतीत में किए गए शुभ एवं अशुभ कार्यों का ही परिणाम है कि उन्हें वर्तमान में अपने साथ हो रहे अच्छे तथा बुरे व्यवहार का परिचय मिल रहा है। यदि यह नहीं होता तो जरा सोचकर देखिए- सभी व्यक्ति का जन्म माँ के उदर से ही होता है, एक ही प्रकार की जन्म लेने की प्रक्रिया होती है तथा माँ के उदर में बीज रूप में आने से लेकर बाह्य जगत में कदम रखने तक एक ही प्रकार की डॉक्टरी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। जब यहाँ तक की प्रक्रिया एक जैसी है तब ऐसा अचानक क्या हो जाता है कि किसी का शिशु आगे चलकर अच्छे क्षेत्र में नाम कमाता है जिससे उस घर के सभी पूर्वजों का मान-सम्मान बढ़ता है तो वहीं दूसरी ओर किसी का शिशु गलत क्षेत्र में नाम कमाता है जिससे माँ-पिता यह सोचने को विवश हो जाते हैं कि क्यों हमने इस शिशु को जन्म दिया।

यह चिरकालिक सत्य है कि सभी व्यक्ति अपने कर्मों का ही फल खाता है। जैसा कर्म खाता उनका पहले रहा होगा उन्हें इस जन्म में वैसा ही उसका प्रतिफल मिलेगा। तभी तो संत तुलसीदास जी ने कहा -

कर्म प्रधान विश्व करी राखा,
जो जस करही सो तस फल चाखा।

कर्मों का फल तो व्यक्ति को चखना ही पड़ता है। कर्मों का ही फल है जब भीष्म पितामह ने साँप को

अधमरा कर कंटीले बबूल पेड़ पर फेंका था जिससे उसके शरीर में अनेकों काँटे गड़ गए थे। उसी का प्रतिफल रहा महाभारत के युद्ध में पितामह को अर्जुन के द्वारा बाणों की सेज मिली थी। यह तो रही धर्मग्रंथ की बात, अपने ही आसपास नजरें दौड़ाकर देखें तो आप ऐसे अनेकों उदाहरण पाएँगे। किसी का पसीना खून के समान कीमती है तो किसी का खून पानी के भाव। किसी ने थोड़ी-सी मेहनत की और मुकाम को पा लिया तो उसके विपरीत किसी की पूरी जिंदगी बीत गई पर वह अपने लक्ष्य को न पा सका।

सवाल यह उठता है कि मान लीजिए हमें इस बात का आभास हो गया है कि मेरे पहले के कर्म अच्छे रहे हैं और मेरे साथ अच्छा ही अच्छा हो रहा है तो मैं क्यों सोचूँ। नहीं, कुछ पल ठहरकर अपने साथी की तकलीफों की तरफ गंभीरता से सोचनी चाहिए कि यदि मेरे कर्म अतीत में अच्छे नहीं रहे होते तो आज वह जिन तकलीफों को भोग रहा है वही स्थिति मेरी भी हो सकती थी। उस ईश्वर तथा अतीत में किए गए अच्छे संस्कारों को धन्यवाद दीजिए जिनकी सही परवरिश के कारण आपको सही राह चुनने का मौका मिला, साथ ही आप कुकर्मों को करने से बच गए। अन्यथा, कर्म गति की मार से कोई नहीं बच पाता है। यह सब सोच-विचार करते हुए जिनका इस जन्म में भाग्य सही जा रहा है तो उन्हें अपने आगे के जीवन को सही करने के लिए अपने द्वारा जान-बूझकर किसी का अहित नहीं करना चाहिए।



पूर्वांचल एक्सप्रेस में एक शाम और एक टीटीई की सच्ची कहानी

बेला कश्यप

राजभाषा अनुभाग, सियालदह

शाम ढल रही थी, पूर्वांचल एक्सप्रेस अपने तय समय पर तेज़ रफ्तार से दौड़ रही थी। ट्रेन की खिड़की से दिखते खेत, गांव और दूर क्षितिज पर सूरज का आखिरी उजाला सफर को और भी यादगार बना रहा था। मैं इस बार किसी सरकारी यात्रा पर नहीं, बल्कि छुट्टियों में अपने रिश्तेदारों से मिलने बिहार आई थी। काम से एक छोटी-सी छुट्टी मिली थी, और उसी का लाभ उठाकर अब वापस कोलकाता लौट रही थी।

जब मैंने अपनी बर्थ पर बैठकर बैग रखा ही था, तभी एक टीटीई हाथ में एचएचटी टैबलेट लिए कोच में आए और विनम्रता से बोले, 'टिकट प्लीज़।' उनका अंदाज़ सधा हुआ था, चेहरा शांत लेकिन सजग और बातचीत में आत्मीयता थी। काले कोट, सफेद शर्ट, कंधे पर बैग और हाथ में एचएचटी लिए वे एक सजीव अनुशासन की मिसाल लग रहे थे। मैंने टिकट दिखाया और बातों-बातों में जाना कि उनका नाम अरुण कुमार है। वे सोनपुर मंडल के अंतर्गत कार्यरत एक अनुभवी टीटीई हैं, जो इस समय हाजीपुर स्क्वायड टीम में तैनात हैं।

यूं तो हर सफर में टीटीई से आमना-सामना होता है, लेकिन इस बार बातों का सिलसिला कुछ अलग ही था। ट्रेन की हलचल के बीच अरुण कुमार मुस्कराते हुए यात्रियों से बातचीत करते, टिकट जांचते, किसी की परेशानी सुनते, किसी को खाली सीट के लिए मदद करते नज़र आ रहे थे। ये वही लोग हैं जिन्हें हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं, लेकिन असल में ये रेलवे के फ्रंटलाइन स्टाफ और रेल के असली राजदूत होते हैं। आम जनता के सबसे करीब, हर समय सामने, हमेशा सक्रिय।

रेलवे में अधिकतर लोग कुर्सी वाली नौकरियों को पसंद करते हैं - आराम, फाइलें, एसी दफ्तर। लेकिन टीटीई की कोई कुर्सी नहीं होती। उनका दफ्तर वो चलती ट्रेन है, जहां हर स्टेशन पर हालात बदल जाते हैं, हर डिब्बे

में नई चुनौतियाँ होती हैं। गर्मी हो या ठंड, भीड़ हो या कोई आपात स्थिति - टीटीई हर हाल में अपनी ड्यूटी निभाते हैं। टिकट जांचते हुए उनका सामना सिर्फ कागज़ों से नहीं, सैकड़ों चेहरों और उनकी कहानियों से होता है।

बातों के बीच अरुण कुमार ने एक घटना सुनाई जिसने मुझे झकझोर दिया। एक बार एक यात्री बिना टिकट सफर कर रहा था और जब नियम के अनुसार जुर्माना लगाया गया, तो उसने रेलवे की 139 हेल्पलाइन पर झूठी शिकायत कर दी। टीटीई ने दुर्व्यवहार किया। लेकिन जब अन्य यात्रियों से पूछताछ और जांच हुई तो सच सामने आया। इसके बावजूद अरुण कुमार ने उस व्यक्ति से कोई कठोर व्यवहार नहीं किया, बल्कि नियमों के अंतर्गत मामले को संयम से सुलझाया। उन्होंने कहा, 'जब लोगों के पास टिकट नहीं होता है तो कुछ लोग झूठी शिकायतें भी कर देते हैं, लेकिन हम संयम से काम लेते हैं, क्योंकि हम डांटने नहीं, समझाने आए हैं।'

टीटीई का काम सिर्फ टिकट जांचना नहीं होता। वे हर यात्री की पहली ज़रूरत होते हैं। कोई महिला अकेली हो, कोई बुजुर्ग सहारा चाहता हो, कोई बीमार यात्री रास्ते में फंस जाए तो सबसे पहले लोग टीटीई को ही आवाज़ देते हैं। सीट न मिले तो शिकायत, सीट मिल जाए तो धन्यवाद। इन दोनों के बीच जो मुस्कान बंटती है, वो शायद ही किसी दफ्तर में बैठे कर्मचारी को नसीब होती हो।

कोरोना काल की जब बात आई, तो अरुण कुमार का चेहरा थोड़ा गंभीर हो गया। उस वक़्त डर तो सबको था, लेकिन ड्यूटी का बुलावा ज्यादा बड़ा था। किट पहनकर दिनभर ट्रेन में घूमना, यात्रियों की मदद करना, टिकट की जांच के साथ-साथ थर्मल स्कैनर से उनका तापमान जांचना ये सब हमारी ज़िम्मेदारी थी। कोई घर जाने से डरता था, लेकिन रेलवे ने हमें आगे रखा और हम पीछे नहीं हटे।



इस बातचीत ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। रेलवे की नींव केवल लोहे की पटरियाँ नहीं हैं, बल्कि वे लोग हैं जो इन पटरियों पर संवेदनाओं की ट्रेन चलाते हैं। जो टिकट जांचते वक्त मुस्कराते हैं, डांटने की जगह समझाते हैं और थकावट में भी अपना फर्ज नहीं भूलते।

उस शाम पूर्वांचल एक्सप्रेस में सिर्फ एक टिकट चेक

नहीं हुआ था- एक कहानी बन रही थी। एक ऐसे टीटीई की कहानी, जो हर दिन हजारों यात्रियों से मिलता है, हजारों सवालियों के जवाब देता है और फिर भी अपनी ड्यूटी को केवल नौकरी नहीं, सेवा मानता है।

उस दिन मैंने महसूस किया कि वर्दी केवल पहनने के लिए नहीं होती कुछ लोग उसे जीते हैं।

सुनहरे जंगल की सीख

बिजेश कुमार सिंह

वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय, पू.रे.

बहुत समय पहले एक सुनहरा जंगल था। जंगल में संसाधनों की कोई कमी नहीं थी और जानवर आपस में मिलजुल कर रहते थे। जंगल का नियम सरल और न्यायोचित था। संसाधनों पर सबका समान अधिकार था और संसाधनों का उपभोग आवश्यकता के अनुसार किया जाता था ताकि संतुलन बना रहे।

इसी जंगल में एक सियार रहता था, जिसका नाम चतुर था। चतुर अपने नाम के अनुसार ही चतुर और लालची था। उसे यह व्यवस्था पसंद नहीं थी कि सबको समान अवसर मिले। वह बिना श्रम किए अधिक पाने की लालसा रखता था।

चतुर ने एक षड्यंत्र रचा और उसने स्वयं को साधु घोषित कर दिया और जंगल की भलाई की बातें करने लगा। भोले-भाले जानवर उसकी बातों से प्रभावित हो गए। सभी उस पर भरोसा करने लगे और उसकी बातों को सत्य मानने लगे। चतुर ने इसका फायदा उठाया और वह धीरे-धीरे सारे संसाधनों को अपने नियंत्रण में कर लिया। जंगल में असंतुलन बढ़ने लगा। जानवरों को परेशानी होने लगी। जीवन जीना मुश्किल हो गया। जानवर पलायन करने लगे।

अब चतुर के पास सब कुछ था जैसा वह चाहता था, पर वह काफी भयभीत था। वह हर समय आशंकित रहने लगा। उसे डर सताने लगा कि कहीं उसकी असलियत सबके सामने न आ जाये, नहीं तो सभी जानवर बंधु उसके शत्रु हो जाएंगे।

एक दिन चतुर भारी संकट में पड़ गया। जंगल में ही एक दलदल वाला तालाब था। चतुर उस तालाब में पानी पीने गया, उसके पैर फिसल गये और वह दलदलवाले तालाब में गिर पड़ा। वह धीरे-धीरे धंसता जा रहा था। वह तैरने की

कोशिश कर रहा था पर उसके पाँव दलदल में फंसते जा रहे थे। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा- 'बचाओ, बचाओ।' सभी जानवर भागते-भागते तालाब के पास आए। चतुर को इस हालत में देखकर अचंभित हो गए। सभी जानवर समझ रहे थे कि चतुर एक साधु आत्मा है, अतः वह स्वयं की रक्षा करने में सक्षम होगा। तभी एक बूढ़े खरगोश ने आवाज लगाई, अरे चतुर भाई! आप तो साधु हैं। आप तो स्वयं ही अपनी रक्षा कर सकते हैं। चतुर ने जोर-जोर से कहा - अरे भाई मुझे माफ कर दो। मैंने तुम लोगों के साथ छल किया है। मैं कोई साधु नहीं हूँ। मैं लोभवश तुम्हारे सामने साधु बनने का ढोंग कर रहा था। मुझमें कोई साधु की शक्ति नहीं है। मैं अपनी गलतियों के लिए शर्मिंदा हूँ। कृपया मुझे माफ कर दो और मेरी रक्षा करो। इस दलदल से मुझे बाहर निकालो।

बूढ़े खरगोश ने कहा कि फिलहाल इसकी जान की रक्षा की जाए। फिर जंगल के बुजुर्ग हाथी से कहा गया कि आप अपनी लंबी सूंड बढ़ाकर इसे बाहर निकालिए। हाथी ने अपनी लंबी सूंड बढ़ाकर चतुर को बाहर निकाला। चतुर अपनी करनी पर शर्मिंदा था और जान बचाने के लिए सबको धन्यवाद दे रहा था।

सभी जानवरों ने यह स्वीकार किया कि दोषी केवल चतुर नहीं है बल्कि हम सभी हैं। हमने दिखावे और शब्दों पर भरोसा किया, चरित्र पर नहीं। सभी जानवरों ने चतुर को माफ कर दिया और वे फिर से मिलजुल कर खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगे। इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि समाज को ठगने वाला ही केवल दोषी नहीं होता बल्कि अपनी सूझ-बूझ खोकर और आंखें बंद करके किसी पर भरोसा करने वाला हर व्यक्ति भी कमोबेश उतना ही दोषी होता है।

सागर संगम की ओर : एक अविस्मरणीय यात्रा

संजय प्रसाद
वरिष्ठ अनुवादक
दपूरे, गार्डनरीच, कोलकाता

कुछ यात्राएं केवल दूरी तय नहीं करतीं बल्कि वे आत्मा के उन किनारों तक ले जाती हैं जहां शब्द थक जाते हैं और मन सिर्फ महसूस करता है। भारत का दक्षिणी छोर अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं आध्यात्मिक गहराई और समुद्र की अनवरत लहरों से एक अद्भुत संसार रचता है। चेन्नै आधुनिकता और परम्परा का, रामेश्वरम भक्ति और पवित्रता का तथा कन्याकुमारी तीन समुद्रों का समागम है जो एक साथ मिलकर प्रकृति, दिव्यता का भव्य चित्र प्रस्तुत करते हैं। इन्हीं अनुभूतियों से जन्म लेता है यह यात्रा वृत्तांत, जहां चेन्नै से रामेश्वरम और वहां से कन्याकुमारी तक की एक पवित्र, सौंदर्यमयी और रोचक यात्रा प्रस्तुत है -

“इस यात्रा ने केवल दृश्य नहीं, अनुभूतियां दी कदमों को नहीं बल्कि भावनाओं को दिशा दी।”

हमारी यात्रा की शुरुआत हावड़ा से चेन्नै मेल (23.55 बजे) से हुई जो सुबह 04.20 बजे चेन्नै सेन्ट्रल पहुँची। चेन्नै शहर की हलचल और सड़कों की चहल-पहल मुझे थोड़ी भारी लगी लेकिन मरीना बीच पहुँचते ही मन शांत हो गया। समुद्र की लहरों की गूँज के साथ मन को स्फूर्ति और ताजगी का एहसास हुआ। सूर्य की किरणों में समुद्र एकदम सुनहला दिखाई पड़ रहा था। ऐसा महसूस हो रहा था कि आसमान और समुद्र मिलकर एकाकार हो गए हैं और हवा की ताजगी और ठंडक तन और मन दोनों को तरोताजा कर रही थीं।

मरीना बीच केवल समुद्र और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है बल्कि यहां स्थित कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्मारक भी इसे विशेष बनाते हैं। इसमें जयललिता स्मारक, गांधी मूर्ति, अन्नमूर्ति और अन्य प्रमुख स्थल शामिल हैं। इसके बाद हमने कपालेश्वर मंदिर का दर्शन किया यह मंदिर प्राचीन स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण है। गोपुरम की सुंदर नक्काशी और

मंदिर में घंटियों की गूँज से हमें एक अजीब-सी शांति महसूस हुई। इसके अलावा चेन्नै की इडली सांभर, फिल्टर कॉफी और समुद्री व्यंजन ने हमारी यात्रा को और भी जीवंत बना दिया।

दूसरे दिन हमने चेन्नै से रामेश्वरम की यात्रा की शुरुआत सड़क मार्ग से प्रारम्भ की क्योंकि पम्बन ब्रिज पर मरम्मत कार्य होने से रेल मार्ग बंद था। हम सुबह तैयार होकर रामेश्वरम के लिए निकल पड़े। रास्ते में हरियाली और समुद्र की लहरें मन को आनंदित कर रही थी। लेकिन सबसे रोमांचक अनुभव तब हुआ जब हमारी कार पम्बन ब्रिज पर रुकी। समुद्र की लहरों की मधुर सरसराहट और नीले समुद्र के ऊपर फैली रेल पटरियां और नीचे हिलती लहरों के दृश्य ने आंखों और मन दोनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। 6 अप्रैल 2025 को माननीय प्रधानमंत्री ने नया पम्बन रेल ब्रिज का उद्घाटन किया जो भारत का पहला वर्टिकल लिफ्ट सी ब्रिज है।

रामेश्वरम चार धामों तथा द्वादश (12) ज्योतिर्लिंगों में से एक होने के कारण हिंदू धर्म और श्रद्धा का महत्वपूर्ण केन्द्र है। मंदिर के लंबे गलियारे, प्राचीन स्तंभ और प्रार्थनाओं की गूँज मन में एक शांति का एहसास कराती है और मन भावविभोर होकर भक्ति में तल्लीन हो जाता है। इसके पास स्थित अग्नि तीर्थम समुद्र की लहरों





और सुकून देने वाले वातावरण के कारण यात्रा को और अधिक यादगार बना देता है। यात्रा के दौरान हमने धनुषकोडी, जो कि रामेश्वरम से 38 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, की वीरान और सुनसान किनारों के भी दर्शन किए जहां पुराने रेलवे स्टेशन के खंडहर, टूटे हुए मकान और रेत में बिखरी नावें इतिहास की गवाही दे रही थीं। इस प्रकार रामेश्वरम, धनुषकोडी और दूरस्थ लंका का एहसास तीनों ने मिलकर हमारी यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया।

हमारा अगला पड़ाव मदुरै का था जो दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित है। यह धार्मिक, ऐतिहासिक और पर्यटन की दृष्टि से भारत के महत्वपूर्ण शहरों में गिना जाता है। यहां हमने सुबह-सुबह मीनाक्षी अम्मन मंदिर के दर्शन किए। विशाल गोपुरम और रंग-बिरंगी नक्काशी से सुसज्जित यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत, द्रविड़ स्थापत्य और आध्यात्मिक परम्परा का सजीव प्रतीक है। मदुरै स्टेशन से रेल मार्ग द्वारा हम कन्याकुमारी के लिए रवाना हुए। कन्याकुमारी स्टेशन से हमलोग केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए उपलब्ध अवकाशगृह में ठहरे जो समुद्र तट से नजदीक लाइट हाउस के पास स्थित है। मैं और श्री उपेन्द्र जी ने यहां से एक दिन के लिए केरल जाने का कार्यक्रम तैयार किया और एक कार लेकर हम सुबह-सुबह तिरुवनंतपुरम, केरल के लिए निकल पड़े। प्रकृति का वास्तविक सौंदर्य देखकर हम आश्चर्यचकित रह गए। रास्ते में हरी-भरी धरती, नारियल के ऊंचे वृक्ष, बैकवाटर की शांत लहरें और समुद्र की गूंजती लहरों ने हमारा मन मोह लिया।

यह हमारा अंतिम पड़ाव था क्योंकि हमारी छुट्टियां भी समाप्त हो चुकी थीं। केवल दो दिन का समय हमारे पास था, इसलिए हमने समयाभाव के कारण केरल के कुछ हिस्सों के ही दर्शन किए। सबसे पहले हमने एक स्पीड बोट द्वारा शांत बैकवाटर और हाउसबोट का मनोहारी दृश्य देखा जो बहुत ही रोमांचक रहा। जब नाव धीरे-धीरे हरी-भरी झीलों और सकरी जलधाराओं से गुजरकर समुद्र के किनारे पहुंची तो आनंद और रोमांच का ठिकाना न रहा। अगला पड़ाव पद्मनाभस्वामी मंदिर था जो तिरुवनंतपुरम में स्थित एक प्राचीन और भव्य मन्दिर

है। यह भगवान विष्णु को समर्पित है और यहां वे अनंतायनम की मुद्रा में शेषनाग पर लेटे हुए विराजमान हैं। मंदिर में पुरुष धोती और महिलाएं साड़ी और पारंपरिक परिधान पहनकर ही प्रवेश कर सकती हैं। यह केवल एक मंदिर नहीं बल्कि आस्था, इतिहास, कला और वैभव का अद्भुत संगम है। मंदिर दर्शन के बाद शाम को हमने कोवलम बीच के मनोहारी दृश्य का मजा लिया। समुद्र के किनारे नारियल पानी पीना, सूरज को समुद्र में डूबते देखना और समुद्री हवा का स्पर्श सदा याद रहेंगे। केरल सचमुच "Gods own Country" है जहां प्रकृति अपने सबसे सुन्दर रूप में दिखती है।

केरल से वापस आते समय हमने कन्याकुमारी के लिए रास्ते में ही योजना बनानी शुरू कर दी। भारत के दक्षिण छोर पर स्थित कन्याकुमारी एक अद्वितीय स्थान है जहां तीन समुद्र अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर एक साथ मिलते हैं। यह जगह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक महत्व और ऐतिहासिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। समुद्र से उगता लाल सूर्य और क्षितिज में डूबता सुनहरा सूर्य मन को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। सुबह सूर्योदय देखकर हमने कन्याकुमारी मंदिर के दर्शन किए और स्टीमर द्वारा विवेकानंद रॉक मेमोरियल जाने के लिए पंक्तिबद्ध हो गए। समुद्र के बीच बना यह स्मारक बहुत ही आकर्षक है। स्मारक के बगल में समुद्र के बीच 133 फीट ऊंची तमिल महाकवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर की प्रतिमा इसका दूसरा बड़ा आकर्षण है। स्मारक पर समुद्र की लहरों से घिरे शांत वातावरण में बैठना एक अद्वितीय अनुभव है। यह वह जगह है जो मन में शांति, हृदय में श्रद्धा और आंखों में सौन्दर्य की छवि छोड़ जाती है।

आज हमें अपने घर वापस लौटना था परन्तु मन आज भी यहां से जाने को तैयार नहीं था। ऐसा लग रहा था कि समुद्र की लहरें मेरे कदमों को रोककर कह रही हो इतनी जल्दी क्या है थोड़ा और ठहरो,

मेरी अनंतता को थोड़ा और महसूस कर लो

आज समुद्र को अलविदा कहते हुए हमने देखा कि सूर्य धीरे-धीरे अस्त हो रहा था और लहरें एक निश्चित लय में तट से टकराकर कह रही थीं - 'फिर लौटकर आना।'



जीवट इंसान

सुषमा मिंज

मुकाधि कार्या., पू.रे., कोलकाता

जब बुढ़ापा अकेले ही गुजरना है तो संतान क्यों पैदा करें? उन्हें काबिल क्यों बनायें, जो हमें दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ दे।

क्यों दुनिया मरती है औलाद के लिए? जरा सोचिए इस विषय पर, इस सत्य कथा से जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण आपको प्राप्त होगा।

हमेशा की तरह मैं आज भी परिसर के बाहर बैठे भिखारियों की मुफ्त स्वास्थ्य जांच में व्यस्त था। स्वास्थ्य जांच और मुफ्त मिलने वाली दवाइयों के लिए सभी भीड़ लगाए कतार में खड़े थे। अनायास मेरा ध्यान एक बुजुर्ग की तरफ गया, जो करीब ही एक पत्थर पर बैठे थे। सीधी नाक, घुंघराले बाल, चेहरे पर सबसे अलग-सी चमक, जिस्म पर पुराने सादे, किन्तु साफ-सुथरे कपड़े। कुछ देर उन्हें देखने के बाद मुझे यकीन हो गया कि वो भिखारी नहीं है। उनका दाहिना पैर घुटने के पास से कटा हुआ था और करीब ही उनकी बैसाखी रखी हुई थी।

फिर मैंने देखा कि आते-जाते लोग उन्हें कुछ दे रहे थे और वे लेकर रख लेते थे। मैंने सोचा कि मेरा ही यह सोचने का भाव गलत था, वो बुजुर्ग भिखारी ही हैं।

उत्सुकावश मैं उनकी तरफ बढ़ा तो कुछ लोगों ने मुझे आवाज लगायी 'उसके करीब न जायें डॉक्टर साहब, वो बूढ़ा तो पागल है।' लेकिन मैं उन आवाजों को नजरअंदाज कर उनके पास गया। सोचा कि जैसे दूसरों के सामने वे अपना हाथ फैला रहे थे वैसे ही मेरे सामने हाथ फैलायेंगे, किन्तु मेरी सोच में फिर चूक हो गई। उन्होंने मेरे सामने हाथ नहीं फैलाया।

मैं उनसे बोला- 'बाबा, आपको कोई शारीरिक परेशानी है क्या?' मेरे पूछने पर वे अपनी बैसाखी के सहारे धीरे से उठते हुए बोले, "Good afternoon doctor... I think I may have some eye problem in my right eye." इतनी बढ़िया अंग्रेजी

सुनकर मैं अवाक रह गया। फिर मैंने उनकी आँखें देखी। पका हुआ मोतियाबिंद था उनकी आँखों में।

मैंने कहा- 'मोतियाबिंद है बाबा, ऑपरेशन करना होगा।'

बुजुर्ग बोले- "Oh cataract? I had cataract operation in 2014 for my left eye in Ruby Hospital."

मैंने पूछा- 'बाबा, आप यहाँ क्या कर रहे हैं? मुझे तो लगता है, आप बहुत पढ़े-लिखे हैं।'

बुजुर्ग हंसे, और हँसते हुए ही बोले- 'पढ़े-लिखे?'

मैंने कहा- 'आप मेरा मजाक उड़ा रहे हैं, बाबा?'

बाबा- "Oh no doctor, why would I? Sorry if I hurt you!"

मैं बोला- 'हर्ट की कोई बात नहीं है बाबा, लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।'

बुजुर्ग- समझकर भी क्या करोगे डॉक्टर?

अच्छा ओके, चलो हम उधर बैठते हैं, वरना लोग तुम्हें भी पागल ही कहेंगे। (और फिर बुजुर्ग हँसने लगे)। करीब ही एक वीरान में कुछ ऊंची जगह थी। हम दोनों वहीं जाकर बैठ गये।

"Well Doctor, I am Mechanical Engineer.."

बुजुर्ग ने अंग्रेजी में ही शुरूआत की..... मैं एक कंपनी में सीनियर मशीन ऑपरेटर था। एक नए ऑपरेटर को सिखाते हुए मेरा पैर मशीन में फंस गया और ये बैसाखी हाथ में आ गयी। कंपनी ने इलाज का सारा खर्च उठाया, बाद में कुछ रकम देकर घर पर बैठा दिया। 'लंगड़े घोड़े को कौन रखता है सर?'

फिर मैंने उस पैसे से अपना ही एक छोटा-सा वर्कशॉप खरीदा। अच्छा घर लिया। बेटा भी मैकेनिकल इंजीनियर है। वर्कशॉप को आगे बढ़कर बेटे ने एक कंपनी बना डाली।

मैं चकराया और बोला, 'बाबा, तो फिर इस हालत में कैसे?'



बुजुर्ग- 'मैं.....?' किस्मत का शिकार हूँ।

बेटे ने अपना बिजनेस बढ़ाने के लिए कंपनी और घर दोनों को बेच दिया। बेटे की तरक्की के लिए मैंने कुछ नहीं कहा। सब कुछ बेचकर वो अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जापान चला गया और हम जापानी गुड्डे-गुड़िया यहाँ रह गये।

ऐसा कहकर बाबा हँसने लगे। हँसना भी इतना दारुण हो सकता है, ये मैंने पहली बार अनुभव किया। फिर मैं बोला- 'लेकिन बाबा! आपके पास तो इतना हुनर है कि जहाँ भी लात मारें वहाँ पानी निकाल दें।' अपने कटे हुए पैर की ओर ताकते हुए बुजुर्ग बोले- 'लात, कहाँ और कैसे मारूँ, बताओ मुझे ?'

बाबा की बातें सुनकर मैं अपनी ही बातों पर शर्मिंदा हो गया। मुझे बहुत बुरा लगा। अतः मैं बोला- 'आई मीन बाबा, आज भी आपको कोई भी नौकरी दे देगा, क्योंकि अपने क्षेत्र में आपको इतने सालों का अनुभव है।'

बुजुर्ग बोले- यस डॉक्टर, और इसी वजह से मैं एक वर्कशॉप में काम करता हूँ। 8000/-रु. वेतन मिलता है मुझे। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा था। मैं बोला तो फिर आज यहाँ कैसे? बुजुर्ग- मेरे बेटे के जाने के बाद मैंने एक बार में एक टीन की छतवाला घर किराये पर लिया। पत्नी को पैरालाइसिस है, वह उठ-बैठ नहीं सकती।

मैं 10 बजे से 5 बजे तक नौकरी करता हूँ। शाम 5 बजे से 7 बजे तक इधर भीख माँगता हूँ और फिर घर जाकर तीनों के लिए खाना बनाता हूँ। आश्चर्य से मैंने पूछा- 'बाबा, तीनों?'

बुजुर्ग- डॉक्टर! बचपन में ही मेरी माँ का स्वर्गवास हो गया। मेरे एक जिगरी दोस्त की माँ ने मुझे बेटे जैसा पाला-पोसा। दो साल पहले मेरे दोस्त का निधन हार्ट अटैक से हो गया तो इसकी 92 वर्षीया माँ को मैं अपने घर ले आया तब से वह हमारे साथ ही रहती हैं।

मैं अवाक रह गया इस जीवट इंसान पर। खुद का एक पाँव नहीं, पत्नी अपंग और आज ये अपने मित्र की माँ की देखभाल करते हैं। '8000/-रु. में माँ के ब्लडप्रेसर और डाइबिटीज की दवाइयाँ मैनेज नहीं हो पातीं। इसलिए 2 घंटे में मुझे जो पैसे मिलते हैं उसे रोज

मैं मेडिकल स्टोर वाले को दे देता हूँ।' मैं अपलक उन्हें देखता रह गया, बहुत कोशिश करने पर भी खुद की आँखें भर आने से रोक नहीं पाया। मैंने कहा- बाबा! मैं आपको नियमित दवाइयाँ दूँ तो आपको भीख नहीं मांगनी पड़ेगी।

बुजुर्ग- नो डॉक्टर, आप भिखारियों के लिए काम करते हैं। आप माँ जी को दवाई देंगे तो माँ जी भिखारी कहलाएंगी न? मैं उनका बेटा हूँ और अभी समर्थ हूँ, यह मुझे मंजूर नहीं।

मैंने निवेदनस्वरूप बाबा का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बोला- 'बाबा! मुझे भिखारियों का डॉक्टर नहीं बल्कि अपना बेटा समझकर मेरी दादी के लिए यह दवाई स्वीकार कर लीजिए।'

अपना हाथ छुड़ाकर बाबा बोले- 'डॉक्टर! अब फिर इस रिश्ते में मुझे मत बांधो प्लीज, एक बार हो गया है हमें छोड़कर..... 'अब सहन करने की ताकत नहीं है।'

ऐसा कहकर बाबा अपनी बैसाखी संभाली और जाते हुए अपना एक हाथ मेरे सिर पर रखा भर-भराई ममता भरी आवाज में बोले- 'अपना ध्यान रखना मेरे बच्चे...।' शब्दों से तो उन्होंने मेरे रिश्ते को ठुकरा दिया था लेकिन उनके हाथ के गर्म स्पर्श ने इस रिश्ते को स्वीकारा था। इस पागल कहे जाने वाले इन्सान के लिए मेरे हाथ अपने आप प्रणाम की मुद्रा में जुड़ गये।





पटरियों के बीच एकल उत्तरदायित्व

दीपक कुमार

वरिष्ठ लिपिक-सह-टाइपिस्ट

प्र.मु.वा.प्र.का., पूर्व रेलवे, कोलकाता

रवि अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था। उनका परिवार रेलवे कॉलोनी में रहता था, जहां सुबह की शुरूआत रेल की सीटी और पटरियों पर दौड़ती ट्रेनों की आवाज से होती थी। रवि के पिता भारतीय रेल में वरिष्ठ तकनीशियन थे और माँ गृहिणी थी। सीमित साधनों के बावजूद घर में अनुशासन, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा का वातावरण था। इकलौता बेटा होने के कारण रवि परिवार की आशाओं का केंद्र था।

रेलवे कॉलोनी में रवि का बचपन अनुशासित लेकिन सुरक्षित माहौल में बीता। वह रोज अपने पिता को वर्दी पहनते देखता और मन ही मन गर्व महसूस करता। पिता अक्सर कहते, रेलवे की नौकरी सिर्फ रोजगार नहीं, देश की सेवा है। माँ हर समय उसकी पढ़ाई और स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहती। इकलौता बेटा होने के कारण उनका सारा स्नेह और चिंता रवि पर ही केंद्रित थी।

रवि पढ़ाई में अच्छा था। कॉलेज की पढ़ाई के लिए उसे बड़े शहर में जाना पड़ा। पहली बार घर और रेलवे कॉलोनी से दूर जाना उसके लिए आसान नहीं था। माँ की आँखें भर आई थीं और पिता ने सिर्फ इतना कहा था, खुद पर भरोसा रखना। शहर की तेज रफ्तार जिंदगी में रवि धीरे-धीरे ढलने लगा। पढ़ाई के साथ-साथ वह रेलवे से जुड़ी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी करने लगा, क्योंकि वह अपने पिता की तरह रेलवे में सेवा करना चाहता था।

कॉलेज के दिनों में रवि ने महसूस किया कि इकलौता बेटा होने का मतलब सिर्फ परिवार का दुलारा होना नहीं, बल्कि भविष्य की पूरी जिम्मेदारी उठाना भी है। जब भी घर से फोन आता, माँ की आवाज में अपनापन होता और पिता की बातों में उम्मीद। रवि अक्सर सोचता कि उसकी सफलता सिर्फ उसकी नहीं, बल्कि पूरे परिवार की होगी।

कॉलेज पूरा होने के बाद रवि को रेलवे में नौकरी

मिल गई। यह खबर सुनकर उसके माता-पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पिता को लगा कि उनका सपना पूरा हो गया है। रवि ने पोस्टिंग के कारण दूसरे ज़ोन में काम शुरू किया। नौकरी के शुरूआती दिनों में वह काम की गंभीरता और जिम्मेदारियों को समझने लगा। रेल संचालन, समयपालन और यात्रियों की सुरक्षा हर काम में सतर्कता जरूरी थी।

कुछ समय बाद पिता की तबीयत बिगड़ने लगी। उम्र और वर्षों की मेहनत का असर दिखने लगा था। माँ अकेली पड़ने लगीं। एक दिन रवि को सूचना मिली कि पिता अस्पताल में भर्ती हैं। वह तुरंत छुट्टी लेकर घर पहुँचा। अस्पताल के बरामदे में बैठा रवि पहली बार गहराई से सोचने लगा। उसे एहसास हुआ कि इकलौता बेटा होने का अर्थ सिर्फ परिवार का नाम आगे बढ़ाना नहीं, बल्कि माता-पिता का सहारा बनना भी है।

पिता के स्वास्थ्य में सुधार हुआ, लेकिन वे पहले जैसे मजबूत नहीं रहे। रवि ने अपने विभाग में स्थानांतरण के लिए आवेदन किया, ताकि वह माता-पिता के पास रह सके। कुछ महीनों बाद उसका स्थानांतरण उसी रेलवे डिवीजन में हो गया जहाँ उसके पिता ने वर्षों सेवा दी थी। यह उसके लिए भावनात्मक क्षण था।

अब रवि रोज वही पटरियाँ देखता था, जिनपर उसके पिता ने अपना जीवन समर्पित किया था। घर में माँ को अब चिंता कम रहती थी और पिता को बेटे पर गर्व महसूस होता था। रवि जान चुका था कि करियर की ऊँचाई से ज़्यादा जरूरी परिवार की उपस्थिति है।

आज रवि अपने काम को ईमानदारी से करता है और माता-पिता की देखभाल भी। वह समझ चुका है कि इकलौता पुत्र होना कोई बोझ नहीं, बल्कि एक ऐसा उत्तरदायित्व है जो जीवन को उद्देश्य और दिशा देता है बिल्कुल रेलवे की पटरियों की तरह, जो मंजिल तक पहुँचने का रास्ता दिखाती हैं।



सोहनलाल की योग्यता

प्रमोद कुमार सिंह
सेवानिवृत्त वरि. अनुवादक
पू. रे., कोलकाता

राजा महेन्द्रनाथ के दरबार में मंत्री सोहनलाल से जलनेवालों की कमी नहीं थी। राजा महेन्द्रनाथ का साला तो कई बार सोहनलाल से मात खाने के बाद भी बाज नहीं आता था। बेगम का भाई होने के कारण अक्सर बेगम की ओर से भी राजा को दबाव सहना पड़ता था।

ऐसे ही एक बार साले साहब खुद को अक्लमंद बताते हुए दीवान पद की माँग करने लगे। सोहनलाल अभी दरबार में नहीं आया था। लिहाजा राजा ने साले साहब से कहा- 'मुझे आज सुबह महल के पीछे से कुत्ते के पिल्ले की आवाजें सुनाई दे रही हैं, शायद कुतिया ने बच्चे दिये हैं। देखकर आओ, फिर बताओ कि यह बात कहां तक सही है।'

साले साहब उस ओर चले गये, कुछ देर बाद लौटकर आए और बोले- 'हुजूर! आपने सही फरमाया, कुतिया ने ही बच्चे दिये हैं।' राजा ने पूछा- 'अच्छ, कितने बच्चे हैं।' साले ने कहा- 'हुजूर! वह तो मैंने गिने ही नहीं।' राजा ने कहा- 'गिनकर आओ।' साले साहब गये और लौटकर बोले- 'हुजूर! सात बच्चे हैं।' राजा ने फिर पूछा- 'कितने नर हैं, कितने मादा?' 'वह तो देखा ही नहीं, हुजूर!' साले साहब ने कहा। राजा ने कहा- 'जाओ, देखकर आओ।' हुक्म पाकर साले साहब फिर गये और लौटकर पुनः जवाब दिया- 'तीन नर और चार मादा हैं हुजूर।' राजा ने फिर पूछा- 'नर पिल्ले किस रंग के हैं?' 'हुजूर! देखकर अभी बताता हूँ।' राजा ने भी ऊबकर कहा- 'रहने दो, बैठ जाओ। एक-एक चीज़ के लिए कितनी बार जाओगे?' साले साहब बैठ गये। इतने में सोहनलाल (मंत्री) दरबार में हाजिर हुआ।

राजा महेन्द्रनाथ बोले- 'सोहनलाल! आज सुबह से महल के पीछे से कुछ पिल्लों की आवाजें आ रही हैं। शायद कुतिया ने बच्चे दिये हैं। जाओ ज़रा देखकर बताओ कि मामला क्या है?' 'जी हुजूर' कहकर सोहनलाल निरीक्षण करने चला गया, थोड़ी देर बाद

लौटकर आया और बोला- 'महाराज! आपने सही फरमाया, कुतिया ने ही बच्चे दिये हैं।' राजा ने पूछा- 'कितने बच्चे हैं?'

'हुजूर! सात बच्चे हैं', सोहनलाल ने कहा। 'कितने नर और कितने मादा हैं?' राजा ने सवाल किया। 'हुजूर' तीन नर और चार मादा हैं।' मंत्री ने जवाब दिया।

'नर किस रंग के हैं?' राजा ने अगला सवाल दागा।

'हुजूर! दो काले हैं और एक सफेद' मंत्री ने आश्वस्त होकर कहा। 'ठीक है, बैठ जाओ।' - राजा ने फरमाया।

अब राजा महेन्द्रनाथ ने अपने साले की ओर देखा जो सिर झुकाए चुपचाप बैठा था। राजा ने उससे पूछा - क्यों? - 'अब तुम क्या कहते हो?' उससे कोई जवाब देते नहीं बन रहा था।

दरबार लगा हुआ था। राजा महेन्द्रनाथ राजकाज देख रहे थे। दरबान ने सूचना दी कि दो शख्स अपने झगड़े का निबटारा करवाने के लिए आना चाहते हैं। राजा ने दोनों को बुलवा लिया। दोनों दरबार में आ गए और महाराज के सामने झुककर अदब के साथ अभिवादन करके खड़े हो गये।

'कहो, क्या समस्या है तुम्हारी?' - राजा ने पूछा।

'हुजूर! मेरा नाम कृष्णा है, मैं वनिक हूँ और चावल बेचने का व्यवसाय करता हूँ तथा यह मतिराम तेली है। इसने मेरी दूकान पर आकर चावल खरीदा और साथ में पैसों से भरी मेरी थैली भी ले गया। जब मैंने इसे पकड़ा और अपनी थैली मांगी तो यह उस थैली को अपनी बताकर मुझे देने से इनकार कर गया। हुजूर! अब आप ही इनसाफ करें।' राजा ने कहा- 'इनसाफ अवश्य होगा।' 'अब तुम कहो, तुम्हें क्या कहना है?' राजा ने तेली से पूछा।

'हुजूर! मेरा नाम मतिराम है और मैं तेली हूँ, हुजूर! मैं अपनी दूकान पर आज तेल की बिक्री के पैसे गिनकर थैली जैसे ही उठाई, यह वनिक आ गया और मुझसे यह



थैली छीन ली। अब उस पर यह अपना हक जमा रहा है। हुजूर! मुझ गरीब के पैसे वापस दिलाकर मुझपर रहम कीजिए।’

दोनों की बातें सुनकर राजा चिन्ता में पड़ गए। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि वह किसके हाथ फैसला दें। उन्होंने सोहनलाल को फैसला करने की जिम्मेवारी सौंपी। सोहनलाल ने उससे पैसे की थैली ले ली और दोनों को कुछ देर के लिए बाहर भेज दिया। सोहनलाल ने सेवक से एक कटोरे में पानी मंगवाया और उस थैली में से कुछ सिक्के निकालकर पानी में डाले। पानी को गौर से देखा। फिर राजा से कहा- हुजूर! इस पानी में सिक्के डालने से तेल का ज़रा भी अंश पानी में नहीं उभर रहा है। यदि ये सिक्के वाकई तेली के होते तो इन सिक्कों पर निश्चित रूप से तेल लगा होता और वह तेल पानी में भी दिखाई देता।’

राजा ने भी पानी में सिक्के डाले, पानी को गौरपूर्वक देखा और फिर सोहनलाल की बात से सहमत हो गए। सोहनलाल ने उन दोनों को दरबार में बुलाया और कहा- ‘मुझे पता चल गया है कि यह थैली किसकी है। मतिराम! तुम झूठ बोल रहे हो, यह थैली कृष्णा की है।’ मतिराम ने एक बार फिर कहा- ‘हुजूर! यह थैली मेरी है। सोहनलाल ने सिक्के डाले पानीवाला कटोरा उसे दिखाते हुए कहा- ‘यदि यह थैली तुम्हारी है, तो इन सिक्कों पर कुछ-न-कुछ तेल अवश्य होना चाहिए था; परंतु तुम भी देख लो, तेल तो अंशमात्र भी नज़र नहीं आ रहा है। मतिराम चुप हो गया। सोहनलाल ने कृष्णा वनिक को उसकी थैली दे दी और मतिराम को कारागार में डाल दिया।



समीक्षा

सोमप्रभा तिवारी ‘नूर’
टी.एम.-3, करगी रोड,
वरि.अनु.अभियंता रेलपथ
द.पू.म.रे., बिलासपुर

जितना सरल रहा ये जीवन, उतनी कठिन प्रतीक्षा तेरी।
ढाई आखर हर पन्ने पर, फिर भी हुई समीक्षा मेरी।।

(1)

एक समर्पित प्रेम ये मेरा,
तुमसे ही था शाम सवेरा।
हाथों की इन रेखाओं में,
तुमको ही हर बार उकेरा।

काश की अंतस तुम पढ़ लेते, इतनी-सी थी इच्छा मेरी।
ढाई आखर हर पन्ने पर, फिर भी हुई समीक्षा मेरी।।

(2)

जब पल दो पल साथ चले थे,
कितने पत्थर शूल मिले थे।
खर-पतवार हटाए हमने,
तब जाकर कुछ फूल खिले थे।

मैं केवल मनके चुन लेती, ऐसी ना थी दीक्षा मेरी।
ढाई आखर हर पन्ने पर, फिर भी हुई समीक्षा मेरी।।

(3)

तुम चिल्लाए, चुप्पी मेरी,
आंसू की थी झड़ी घनेरी।
मेरा प्रीत समझ पाने में,
तुमने क्यों की इतनी देरी?

क्यों जाने-अनजाने में भी, होती रही परीक्षा मेरी।
ढाई आखर हर पन्ने पर, फिर भी हुई समीक्षा मेरी।।



न्यायोचित दण्ड

प्रभाष चंद्र मिश्रा

वरि. तकनीशियन, लिलुआ कारखाना

आखिरकार श्रीराम के 14 वर्ष का वनवास पूरा होने को था। वह सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटने की तैयारी करने लगे। इन 14 वर्षों में उन्होंने काफी कष्ट उठाये थे और बुराई का नाश किया था। उन्होंने लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण और अनेक दूसरे वानर योद्धाओं के सहयोग से रावण का अंत कर दिया था। युद्ध की समाप्ति के पश्चात् उन्होंने लंका का राज्य विभीषण को सौंप दिया था और अब वे वापस लौट रहे थे।

अयोध्या लौटते हुए राम के मन में भरत के ये शब्द गूँज रहे थे- 'भइया, अगर आपने 14 वर्ष खत्म होने के बाद अयोध्या लौटने में एक दिन की भी देरी की तो आप अपने भरत को जीवित नहीं देखेंगे।' राम जानते थे कि भरत उनसे बेहद प्यार करते हैं, इसलिए उन्हें भरत की चिंता सता रही थी। यही कारण है कि वह बिना देर किए अयोध्या पहुंचना चाहते थे। आखिर वह पल आ ही गया जब राम, सीता और लक्ष्मण अपने प्रिय भरत एवं अयोध्यावासियों के बीच थे। पिछले 14 वर्षों की दूरी पल में ही मिट गयी थी और वह दिन भी आ गया जिसका समस्त अयोध्यावासियों को बेसब्री से इंतजार था अर्थात् राम के राजतिलक का दिन। राम अयोध्या के राजा हो गये। राज्य में चारों ओर खुशहाली थी और प्रजा अमन-चैन से रह रही थी। श्रीराम की न्यायप्रियता की बातें दूर-दूर तक फैल रही थीं।

अयोध्या में सब कुछ ठीक चल रहा था। वहाँ एक पुजारी भी रहता था जो बड़ा ज्ञानी और धर्म-कर्म के मामले में नियमों का पाबंद भी था। एक दिन मंदिर में पूजा करने के दौरान उसके कानों में कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। उसने आँखें खोलीं, तो मंदिर में एक कुत्ते को खड़े पाया। उसके क्रोध की सीमा ना रही। उसने पास में रखी एक लाठी उठायी और कुत्ते की पिटाई शुरू कर दी। लाठी की मार से कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा और अपनी जान बचाकर भागने लगा।

भागने के दौरान वह पुजारी से टकरा गया। अब तो पुजारी और भी अधिक आगबबूला हो गया तथा गालियाँ देते हुए उसकी ओर दौड़ा, लेकिन तब तक कुत्ता वहाँ से भाग चुका था। उसके जाने के बाद पंडित ने मंदिर को फिर से धोया और खुद भी दुबारा नहाया।

इस घटना के बाद उसका मन पूजा में नहीं लगा और वह घर चला गया। उसे रात में ठीक से नींद भी नहीं आई। उसका ध्यान बार-बार सुबहवाली घटना की ओर चला जाता था और गुस्सा आ-जा रहा था।

इधर वह कुत्ता पुजारी की मार से बहुत दुखी था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी छोटी-सी बात पर उस पुजारी ने उसे इतनी बुरी तरह क्यों मारा। वह सोचने लगा कि आखिर रामराज में उसके साथ ऐसा अन्याय क्यों हुआ। कुछ सोचकर कुत्ते ने श्रीराम के दरबार में इन्साफ के लिए जाने का निश्चय किया। वह अपने साथ हुए इस अन्याय की शिकायत राजा श्रीराम से करना चाहता था। यही सब सोचते-सोचते वह महल में पहुंच गया और उसने दरवान से कहा कि वह राजा श्रीराम से मिलने आया है। दरवान ने पूछा- 'क्यों मिलना चाहते हो? कुत्ते ने जवाब दिया- 'मेरे साथ बड़ा अन्याय हुआ है।' दरवान ने उसकी बात सुनकर उसे वहीं रोका और सभा में जाकर श्रीराम को सारी बात बताई। सुनकर श्रीराम ने दरवान से उस कुत्ते को अंदर लाने के लिए कहा।

दरबार में पहुंचकर कुत्ते ने श्रीराम को प्रणाम किया। उन्होंने पूछा- 'कहो, तुम्हारी क्या समस्या है?' कुत्ते ने सुबह मंदिर में अपने साथ घटी सारी घटना बता दी और कहा- 'प्रभु! अब आप ही न्याय करें।' राम ने तुरंत सेवक को आज्ञा दी कि कल सवेरे पुजारी को दरबार में प्रस्तुत किया जाये और साथ ही कुत्ते को उस समय उपस्थित रहने के लिए कहा गया। दूसरे दिन सुबह-सुबह राजा के सिपाही पुजारी के घर पहुंच गये और राजा का



आदेश सुनाया। सुनते ही पुजारी किसी अनिष्ट की आशंका से काँप गया कि क्या हुआ जो आज सुबह-सवेरे ही रघुनंदन जी ने उन्हें याद किया। यह सब सोचते हुए वह सिपाही के साथ दरबार में पहुंचा। उसने हाथ जोड़कर श्रीराम को प्रणाम किया। इसी बीच उसकी नज़र वहां मौजूद कुत्ते पर पड़ी तो वह चौंक गया। श्रीराम ने कहा- 'हे ब्राह्मण देवता! इसकी शिकायत है कि कल आपने इसके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है और इसे मारा भी। इसपर आप क्या कहना चाहेंगे?'

पुजारी ने कहा- प्रभु! यह ठीक कह रहा है, परन्तु इसमें इसका कसूर है। इसने मंदिर में प्रवेश कर उसे दूषित कर दिया, इसलिए मैंने इसे दंड दिया। श्रीराम ने कहा- परंतु इसे दंड देने का अधिकार आपको नहीं है और इसके मंदिर में प्रवेश करने से वह दूषित कैसे हो गया?

राजा की यह बात सुनकर पुजारी माफी मांगने लगा, परंतु श्रीराम ने कहा- 'आपने अपराध किया है तो इसका दंड भी भुगतना होगा।' लेकिन श्रीराम दुविधा में थे कि पुजारी को क्या दंड दें। उन्होंने सभा में उपस्थित मंत्रियों से पूछा, लेकिन कोई भी उक्त पुजारी के लिए दंड निर्धारित नहीं कर पाया। आखिरकार, श्रीराम ने कुत्ते की ओर देखते हुए कहा, यह पुजारी आपका अपराधी है, इसलिए इसका दंड भी आप ही तय करें। कुत्ते ने एक

बार पुजारी की ओर देखा और श्रीराम से कहा- 'प्रभु! इन्हें दण्डस्वरूप किसी मठ का महंत बना दिया जाये।'

श्रीराम ने कुत्ते के सुझाव को मानते हुए उस पुजारी को दण्डस्वरूप एक मठ का महंत घोषित कर दिया। महाराज रामचंद्रजी ने पुजारी को कुत्ते के कहे अनुसार दण्ड तो दे दिया, परंतु वह हैरान थे कि यह दण्ड है या पुरस्कार। आखिर उनसे नहीं रहा गया, तो उन्होंने कुत्ते से उसके इस अनोखे फैसले के बारे में पूछा। कुत्ते ने कहा- 'प्रभु! मैंने पुजारी को दण्ड ही दिया है, पुरस्कार नहीं।' श्रीराम ने पूछा- 'वह कैसे?' कुत्ते ने सुनाया- 'हे राजन! मैं अपने पूर्व जन्म में एक मठ का महंत था। उस पद पर रहते हुए मैंने कई गलत काम किये। भोग-विलास का जीवन बिताते हुए मैंने उस पद का दुरुपयोग किया, जिसके कारण मुझे इस जन्म में कुत्ता बनना पड़ा। मैं चाहता हूँ कि यह पुजारी भी मेरी तरह ही महंत बनकर जनम-जनम तक अपने पाप का प्रायश्चित्त करे, क्योंकि यह तय है कि महंत के पद का दुरुपयोग ये अवश्य करेंगे और मेरे द्वारा दिया गया दण्ड इन्हें कई जन्मों तक भुगतना पड़ेगा। कुत्ते से यह वृत्तांत सुनकर श्रीराम हैरान रह गये। उन्हें अब उस कुत्ते की बातों का मर्म समझ में आ गया था।



शिक्षा सबसे अच्छा मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है।





अरावली - मरु प्रदेश का रक्षक

इन्द्रज्योति रॉय

कनिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे, मालदा

गुजरात से लेकर राजस्थान और हरियाणा होते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तक लगभग 690 किलोमीटर तक फैली पहाड़ियां, भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी वलित पर्वत प्रणाली का निर्माण करती, अरावली पर्वतमाला है। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि अरावली पर्वतमाला का महत्व उनकी ऊंचाई में नहीं, बल्कि उसके कार्यों में परिलक्षित होता है। ये पर्वतमालाएं एक प्राकृतिक जल संग्रहण प्रणाली की तरह काम करती हैं, इनकी पथरीली संरचना वर्षा के पानी को धीरे-धीरे रिसने देती है और जल भंडारों को भर देती है। ये जलभंडार राजस्थान के कई कस्बों और दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद और अलवर जैसे बड़े शहरों को पानी की आपूर्ति करते हैं। अरावली पर्वतमालाएं थार रेगिस्तान के पूर्वी भारत की ओर फैलने की गति को धीमा करने में भी सहायक हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि पर्वतमाला को नुकसान पहुंचाना जारी रहा, तो मरुस्थलीकरण बढ़ सकता है, साथ ही सिंधु गंगा के मैदानों में धूल भरी आंधी और भीषण गर्मी भी बढ़ सकती है।

अरावली पर्वत तब बने थे जब गंगा नदी अपने अस्तित्व में नहीं थी। यहाँ तक कि नवीन पर्वतमाला हिमालय भी नहीं था। महाद्वीप धीरे-धीरे जुड़ रहे थे। जीवन की उत्पत्ति की शुरुआत हो रही थी। 250 करोड़ साल पुरानी इन पर्वतमालाओं में भारत की धरती पर फैली अरावली पर्वत श्रृंखला न केवल एक भौगोलिक चमत्कार है, बल्कि यह दुनिया की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। राजस्थान, हरियाणा, गुजरात और दिल्ली तक फैली यह श्रृंखला करीब 670 किलोमीटर लंबी है। इसका इतिहास पृथ्वी के प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है। वैज्ञानिकों के अनुसार, अरावली का निर्माण प्रोटेरोजोइक युग में हुआ था, जो लगभग 250-350 करोड़ साल पहले शुरू हुआ था। इसकी ऊंचाई औसतन 300 से 900 मीटर तक है। सबसे

ऊंची चोटी गुरु शिखर है जो 1,722 मीटर ऊंची है। यह राजस्थान के इकलौते हिल स्टेशन माउंट आबू में है।

अरावली का नाम संस्कृत शब्द 'अरावलि' से आया है, जिसका अर्थ है- पत्थरों की पंक्ति। यह श्रृंखला भारत की प्राकृतिक दीवार की तरह काम करती है, जो थार रेगिस्तान के फैलाव को रोकती है। उत्तरी भारत को शुष्क हवाओं से बचाती है, यानी सूखी और गर्म हवाओं से। वैज्ञानिक दृष्टि से, अरावली दुनिया की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है; जबकि हिमालय जैसी युवा पर्वत श्रृंखलाएं मात्र 5 करोड़ वर्ष पुरानी हैं। यह प्रोटेरोजोइक युग की देन है, जब पृथ्वी की क्रस्ट (यानी ऊपरी परत) में बड़े बदलाव हो रहे थे। अरावली और विंध्याचल अरबों साल पुरानी हैं, जबकि हिमालय लगभग 56 करोड़ साल पहले बनना शुरू हुआ था और आज भी बन रहा है, जो हिमालय को नवीनतम बनाता है। अरावली न केवल भूवैज्ञानिक इतिहास की किताब है। यह खनिजों से समृद्ध है। कई नदियों का स्रोत है, जैसे- लूनी, बनास और साबरमती। इसके जंगल जैव विविधता से भरे हैं, जहां दुर्लभ पौधे और जानवर पाए जाते हैं।

अरावली का योगदान बहुआयामी है। यह पर्यावरण संतुलन बनाए रखती है, जल संरक्षण में मदद करती है। आजकल अवैध खनन और शहरीकरण के कारण इसकी स्थिति खतरे में है। अरावली पर्वत श्रृंखला का निर्माण एक लंबी भूवैज्ञानिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसे ओरोजेनी कहा जाता है। पृथ्वी की टेक्टॉनिक प्लेट का निर्माण 1.8 अरब वर्ष पहले, जब प्राचीन केटॉनों (पृथ्वी की पुरानी स्थिर क्रस्ट के टुकड़े) के टकराने से हुआ। पृथ्वी की क्रस्ट कई प्लेटों में बंटी हुई हैं, जो मेंटल (पृथ्वी की दूसरी परत) के ऊपर तैरती रहती हैं। ये प्लेटें धीरे-धीरे साल में कुछ सेंटीमीटर चलती हैं। जब दो प्लेटें टकराती हैं, तो पर्वतों का निर्माण होता है। अरावली तीन प्रमुख केटॉनों- बुंदेलखंड केटॉन, राजस्थान केटॉन और



अन्य एक केटॉन के टकराने से बनी है। यह प्रक्रिया 'अरावली-दिल्ली-ओरोजन' के नाम से जानी जाती है। वैज्ञानिक दृष्टि से अरावली का योगदान केवल सौंदर्यपरक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और व्यावहारिक है।

यह 'भारत की प्राकृतिक हरी दीवार' है, जो थार रेगिस्तान को पूर्व की ओर फैलने से रोकती है। बिना अरावली के राजस्थान और हरियाणा का मौसम ज्यादा शुष्क होता। यह मॉनसून की हवाओं को प्रभावित करती है, वर्षा बढ़ाती है। अरावली कई नदियों का स्रोत है। ये नदियां कृषि और पीने के पानी की उपलब्धता के लिए महत्वपूर्ण हैं। वैज्ञानिक रूप से यह जल चक्र में मदद करती है, वर्षा का पानी चट्टानों में रिसता है और भूजल बनता है। अरावली खनिजों से भरपूर है। यहां जस्ता, सीसा, तांबा, चांदी और संगमरमर पाए जाते हैं। राजस्थान के उदयपुर और राजसमंद क्षेत्र में खनन उद्योग फल-फूल रहा है। यह एक इको-लॉजिकल हॉटस्पॉट है। यहां 300 से ज्यादा प्रजातियों के पक्षी,

तेंदुआ, स्लॉथ बियर जैसे जानवर हैं, पौधों में नीम, बबूल, ओक जैसे।

वैज्ञानिक अध्ययन से साबित हो गया है कि यह क्षेत्र प्राचीन वनस्पति के संरक्षक के रूप में कार्य कर रहा है। जानवरों और वनस्पतियों का लंबा-चौड़ा कॉरिडोर है। वर्तमान स्थिति और चुनौतियों को देखते हुए यह लोक प्रचलित है कि आज अरावली का अस्तित्व संकटग्रस्त हो रहा है, यह खतरे में है। अवैध खनन ने 20 प्रतिशत क्षेत्र को नष्ट कर दिया है। जलवायु परिवर्तन से वर्षा कम हो रही है। सरकार अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट चला रही है। वैज्ञानिक सुझाव देते आए हैं कि यहां जंगल बचाना जरूरी है और बनाना भी। खनन नियंत्रण जरूरी है। अरावली भारत की प्राचीन धरोहर है। इसका योगदान देश के पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और जैव-विविधता में है। हमें इसे बचाना और संरक्षित करना होगा क्योंकि अगर अरावली खत्म हुई तो दिल्ली-एनसीआर तक के क्षेत्र को रेगिस्तान बनने में समय नहीं लगेगा।

सपने खुली आंखों के

सूरज ठाकुर
कार्यालय अधीक्षक

मैंने खुली आँखों से
जो सपने देखे हैं
उसे सच करने निकला हूँ।
जीवन की धार को
सपनों के सागर से
मिलाने निकला हूँ
मानों, पथरीली पहाड़-सी
खड़ी समस्याओं को
अपने जुनून से
ओजस से
तप से
काटने निकला हूँ
मैंने खुली आँखों से
जो सपने देखे हैं
उसे सच करने निकला हूँ !!
अपमान को हंस के,
बेचैनी को धीरज से



अपशब्द को अनसुना करके
संघर्ष को गले लगाने निकला हूँ
मैंने खुली आँखों से
जो सपने देखे हैं
उसे सच करने निकला हूँ।
भूख, गरीबी, अन्याय
शिक्षा की तलवार से,
ऊँच-नीच, नारी-पुरुष
भेदभाव को
आत्म स्वाभिमान के प्रहास से,
पिछड़े, देहाती, गंवार
शब्दों को
योग्यता के बल से
पछाड़ने निकला हूँ
मैंने खुली आँखों से
जो सपने देखे हैं
उसे सच करने निकला हूँ



जरूरत और शांति

शिव प्रसाद साव
कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग, सियालदह

जरूरत एक ऐसा शब्द है जिससे हर कोई परिचित है। बिना जरूरत के जीवन का एक पल भी नहीं चल सकता है। इसलिए कहा गया है कि आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है। पर समय के साथ जरूरतों का स्वरूप बदल गया है। कभी जरूरत भोजन, वस्त्र और आश्रय की थी, आज जरूरत बन गई है- नया मोबाइल, नई कार, सोशल मीडिया पर पहचान और लगातार अपडेट रहना। मनुष्य की यह नई दौड़ थमने का नाम नहीं लेती। हम अपनी जरूरतों को पूरा करने की व्यवस्था में उलझकर रह गए हैं। यह भूल चुके हैं कि हम किसके लिए जिंदा हैं। हमारे भीतर सांस आती-जाती है और इस सीमित समय के भीतर हमें अपनी असली जरूरतों को पहचानना है। मछली को पानी की जरूरत होती है, पानी को मछली की नहीं। ठीक उसी तरह मनुष्य को शांति की जरूरत है, पर शांति को मनुष्य की नहीं। वह हमारे भीतर है, पर हम उसे बाहर खोजते रहते हैं किसी नौकरी में, किसी रिश्ते में या लाइक और फॉलोअर की गिनती में। आज जब दुनिया युद्धों, आर्थिक अस्थिरता और पर्यावरण संकटों से जूझ रही है, तब जरूरत की परिभाषा खुद में ही उलझी दिखाई देती है। एक तरफ लोग तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं, तो दूसरी ओर मानसिक तनाव, अवसाद और अकेलेपन के आंकड़े बढ़ते जा रहे हैं। यह विरोधाभास बताता है कि हमारी असली जरूरत कहीं नजर नहीं आती जो भीतर की शांति है। शांति का मतलब यह नहीं है कि युद्ध बंद हो जाय या कोई विवाद खत्म हो जाए। असली शांति वह है जो मन के भीतर ठहर जाए। जब हम अपनी आंतरिक जरूरत को समझ लेते हैं तब जीवन का हर अनुभव बदल जाता है। जो शांति हम बाहर ढूँढ़ते हैं, वह वास्तव में हमारे भीतर ही जन्म लेती है।

मनुष्य का जीवन एक अद्भुत संतुलन पर आधारित

है यह संतुलन है जरूरत और शांति के बीच। जहाँ जरूरतें हमारे जीवन के भौतिक पक्ष को संभालती हैं, वहीं शांति हमारे मानसिक और आत्मिक जीवन को पूर्ण बनाती है। यदि इन दोनों में संतुलन न हो, तो जीवन अधूरा, अशांत और संघर्षपूर्ण बन जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपनी जरूरतों और शांति के बीच सही संबंध को समझे और उसका पालन करे। जरूरत का अर्थ है वह चीज़ जो जीवन के लिए अनिवार्य हो। जरूरतें मनुष्य को प्रेरित करती हैं कि वह परिश्रम करे, संघर्ष करे और आगे बढ़े। मनुष्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए मेहनत करता है, तकनीकी प्रगति करता है और समाज के विकास में योगदान देता है। दरअसल, यही जरूरतें सभ्यता और संस्कृति के विकास की आधारशिला हैं। लेकिन जब जरूरतें अपनी सीमाओं को पार कर जाती हैं, तब वे लालच, भोग-विलास और असंतोष का रूप ले लेती हैं। ऐसे में इनसान अपनी शांति खो बैठता है। जरूरतें जीवन का आधार तो हैं, लेकिन अगर वे अनियंत्रित हो जाएँ, तो यही आधार जीवन के विनाश का कारण बन सकता है।

शांति का अर्थ है- अपने भीतर के द्वंद्व को समाप्त करना और आत्मसंतोष की अवस्था प्राप्त करना। शांति केवल युद्ध या कलह का अभाव नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक स्थिति है। जब मनुष्य अपने भीतर स्थिरता, संतोष और आत्मविश्वास का अनुभव करता है, तब वह शांति प्राप्त करता है। यह शांति न तो धन से खरीदी जा सकती है, न ही बाहरी साधनों से प्राप्त की जा सकती है। सच्ची शांति का स्रोत हमारे मन, विचार और कर्म में निहित है। जिस व्यक्ति का मन संयमित होता है, जिसके विचार सकारात्मक होते हैं और जो दूसरों के प्रति दया और करुणा रखता है वही व्यक्ति सच्ची शांति का अनुभव करता है।

जरूरत और शांति दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।



जरूरतें जीवन को चलाती हैं, जबकि शांति जीवन को दिशा देती है। यदि जरूरतें सीमित और संयमित हों, तो जीवन में शांति बनी रहती है। लेकिन जब जरूरतें इच्छाओं का रूप ले लेती हैं, तो मनुष्य का मन बेचैन हो जाता है। महात्मा गांधी ने कहा था- धरती पर हर व्यक्ति की जरूरतें पूरी करने लायक संसाधन हैं, लेकिन किसी एक व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए नहीं। यह कथन हमें सिखाता है कि जरूरतें जितनी सीमित रहेंगी, जीवन में उतनी ही शांति बनी रहेगी। जो व्यक्ति अपनी जरूरतों को पहचानकर केवल आवश्यक चीजों पर ध्यान देता है, वह सदैव शांत और संतुष्ट रहता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अधिक पाने की दौड़ में लगा रहता है, उसका मन कभी शांत नहीं रह सकता।

आधुनिक युग में जरूरत और शांति का असंतुलन बढ़ता ही जा रहा है। आज का युग भौतिक प्रगति का युग है। विज्ञान, तकनीक और आधुनिकता ने मनुष्य को सुविधाओं से भर दिया है। अब हर चीज़ एक क्लिक पर उपलब्ध है, लेकिन मन की शांति लगातार घटती जा रही है। आज का मनुष्य पहले से अधिक समृद्ध है, लेकिन पहले से अधिक अशांत और तनावग्रस्त भी है। लोगों के पास महंगे घर, गाड़ियाँ, पद और प्रतिष्ठा तो हैं, परंतु उनके मन में सुकून नहीं है। इसका कारण है - जरूरतों का असीमित विस्तार। हमने अपनी इच्छाओं को जरूरतों का नाम दे दिया है। इससे जीवन में तनाव, ईर्ष्या और असंतोष बढ़ता जा रहा है। आज के युग में शांति

पाने के लिए सबसे पहले हमें अपनी जरूरतों पर नियंत्रण रखना होगा। जब हम भौतिक चीजों से अधिक मानसिक और आत्मिक विकास पर ध्यान देंगे, तभी सच्ची शांति प्राप्त होगी। शांति पाने के लिए मनुष्य को अपनी जरूरतों और इच्छाओं का सही मूल्यांकन करना चाहिए। व्यक्तिगत शांति ही समाज की शांति का आधार है। यदि हर व्यक्ति अपनी जरूरतों को सीमित रखे और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करे, तो समाज में झगड़े और असंतोष नहीं होंगे। आज दुनिया के अधिकतर संघर्ष जरूरतों के असंतुलन से ही जन्म लेते हैं, कोई अधिक चाहता है, तो किसी को कम मिलता है। अगर मनुष्य अपनी जरूरतों को समझे और संयम रखे, तो न केवल व्यक्ति बल्कि पूरा समाज शांतिपूर्ण हो सकता है। जरूरत और शांति जीवन के दो पहिए हैं। जरूरतें हमें जीने की प्रेरणा देती हैं, जबकि शांति हमें जीवन का अर्थ समझाती है। जरूरतें सीमित रहें तो वे वरदान हैं, परंतु यदि वे लालच में बदल जाएँ, तो वे शांति के सबसे बड़े शत्रु बन जाती हैं। सच्चा सुख उस व्यक्ति के पास है जो अपनी जरूरतों को पहचानता है, अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखता है और अपने भीतर की शांति को महत्व देता है। आज के युग में सबसे बड़ी उपलब्धि वही है- मन की शांति। भौतिक साधन हमें सुविधा दे सकते हैं, पर शांति नहीं। इसलिए कहा गया है- जहाँ जरूरतें सीमित होती हैं, वहीं सच्ची शांति बसती है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गांधी

हिन्दी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

- मदन मोहन मालवीय



यस मैडम

विमल कुमार राव

वरिष्ठ तकनीशियन, लिलुआ कारखाना

बहुत पहले की बात है। एक राजा अपने तथाकथित बुद्धिमान और चतुर मंत्री के साथ शाम को बगीचे में टहल रहे थे। राजकाज की बातें करते-करते राजा ने मंत्री से अचानक पूछा- 'सुना है कि तुम अपनी बीवी से बहुत डरते हो' मंत्री को राजा से इस तरह के सवाल का अंदेशा नहीं था। उसने हिम्मत करके संभलते हुए कहा- 'जी ! अकेला मैं ही क्या, इस सल्तनत का हर आदमी अपनी बीवी से डरता है।'

राजा ने मंत्री की तरफ तिरछी नज़र से देखते हुए कहा- 'तुम अपनी कमजोरी छिपाने के लिए सब लोगों पर इलज़ाम नहीं लगा सकते।' मंत्री ने कहा- 'महाराज ! 'मैं जो भी कह रहा हूँ, वह एक कड़वी सच्चाई है। कोई मुँह से बोले या ना बोले, परन्तु हर इन्सान अपनी बीवी से डरता अवश्य है।'

राजा ने पूछा - 'क्या तुम यह साबित कर सकते हो ?' इस पर मंत्री ने झट से हामी भर दी। अपनी आदत के अनुसार राजा ने फ़ौरन अपना फरमान सुना डाला कि तुम यदि सात दिनों के भीतर यह साबित नहीं कर पाए तो तुम्हारा सिर कलम कर दिया जाएगा।

मंत्री ने चुनौती की गंभीरता को स्वीकार करते हुए नगर के सभी शादीशुदा पुरुषों की एक जनसभा बुलाने का हुक्म जारी करवा दिया। एक नियत तारीख को नगर के सभी शादीशुदा मर्द जब हाज़िर हुए तो राजा ने मंत्री को उसका वादा याद करवाया। मंत्री ने भी पूरे विश्वास के साथ अपना काम शुरू कर दिया। मंत्री ने सभी से एक-एक करके प्रश्न पूछना शुरू किया कि क्या वे अपनी बीवी से डरते हैं। अधिकांश लोगों ने स्वीकार कर लिया कि वे किसी न किसी कारणवश अपनी-अपनी बीवी से डरते हैं। मंत्री ने उन सभी लोगों को एक-एक अंडा देकर एक तरफ बैठने को कह दिया।

यह सब देखकर राजा भी चिंतित हो गए कि यह क्या हो रहा है। हमारी फौज का एक से एक बहादुर योद्धा भी अपनी बीवी के सामने भीगी बिल्ली नज़र आ रहा है। कुछ देर बाद एक हट्टे-कट्टे नौजवान की बारी आई और उससे भी यही सवाल पूछा गया। यह नौजवान औरों से अलग था। उसने कहा- 'बीवी से कैसा डरना ! बीवी तो पैर की जूती है। उसकी क्या हिम्मत कि मेरे सामने कुछ

भी बोल जाए।' यह सुनकर राजा को थोड़ी तसल्ली हुई कि चलो कोई तो निकला जिसने इतनी बात कहने की हिम्मत दिखाई। जब हर तरीके से परख लिया गया तो राजा ने उसे एक काला घोड़ा इनाम में दिया।

घोड़ा लेकर वह नौजवान खुश होकर अपने घर पहुँचा, तो उसकी बीवी ने हैरान होकर पूछा- सुबह तो पैदल धक्के खाते हुए गए थे, अब यह किसका घोड़ा उठा लाए हो ? नौजवान ने बीवी को सारा किस्सा कह सुनाया। बीवी ने कहा- 'तुम्हें सारी उम्र अक्ल नहीं आएगी। यदि इतना बड़ा इनाम जीता ही था, तो दरबार से सफेद घोड़ा लेकर आते, यह क्या काले रंग का घोड़ा उठा लाए हो ?' नौजवान ने कहा- 'बेगम ! तुम चिंता मत करो। आज बादशाह सलामत मुझसे बहुत खुश हैं। यह लो, मैं अभी घोड़ा बदलकर लाता हूँ।'

कुछ देर बाद ही वह काला घोड़ा लेकर वापस दरबार में पहुँचा और मंत्री से विनती करने लगा- 'मेरी बीवी को यह काला घोड़ा पसंद नहीं है, अतएव आपसे निवेदन है कि मुझे इसके बदले सफेद घोड़ा दे दें।' मंत्री ने कहा- 'यह काला घोड़ा उधर बांध दो और यह अंडा लेकर घर जाओ।' बादशाह ने उत्सुकतावश पूछा कि आखिर माजरा क्या है ? मंत्री ने कहा कि यह नौजवान पहले तो कह रहा था कि अपनी बीवी से नहीं डरता, लेकिन जब बीवी ने काले घोड़े की जगह सफेद घोड़ा लाने को कहा, तो यह उसको ना नहीं कर सका। मंत्री ने आगे कहा- 'महाराज ! इसकी बीवी बहुत सुंदर है। उसको यह क्या, कोई भी व्यक्ति किसी भी काम के लिए ना कहने की हिम्मत नहीं कर सकता।'

राजा ने मंत्री से कहा- 'अच्छ, अगर ऐसी बात है, तो हम भी ऐसी खूबसूरत औरत को देखना चाहेंगे। तुम किसी तरह यह इंतज़ाम करवाओ लेकिन एक बात का ध्यान रहे कि हमारी बेगम साहिबा को इस बात की भनक भी नहीं लगनी चाहिए।' मंत्री ने कहा- 'जहाँपनाह ! यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है। मैं कल ही उस औरत से आपकी मुलाकात करवाता हूँ।' अब मंत्री ने मुस्कराते हुए कहा- 'जहाँपनाह ! आप अकेले ही बचे थे, अब आप भी यह अंडा पकड़ लें।' बादशाह झेंप गए। वह आखिरकार मान ही गए - 'मैं भी अपनी बीवी से डरता हूँ।'



गंगा डॉल्फिन

कृष्णानन्द चौरसिया
कनिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे, मालदा

डॉल्फिन, जिसे आम भाषा में सूंस कहा जाता है, एक समुद्री स्तनधारी जीव है। अपने श्वसन की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होनेवाली ध्वनि के कारण इसे स्थानीय रूप से सूंस कहा जाता है। ये विश्व भर में पाई जाती हैं, खास तौर पर महाद्वीपीय जल सीमा के उथले सागरीय क्षेत्रों में। ये मांसाहारी होती हैं और छोटी मछलियों और कीड़ों को खाती हैं। डॉल्फिन की एक प्रजाति गंगा डॉल्फिन है, जो आज विलुप्तप्राय प्रजाति की सूची में शामिल है। गंगा नदी में पायी जानेवाली डॉल्फिन को 'टाइगर ऑफ गंगा' भी कहा जाता है। इस प्रजाति की आधिकारिक खोज वर्ष 1801 में हुई थी। नदी डॉल्फिनों को लेकर किए गए व्यापक सर्वेक्षण से पता चला है कि मुख्य रूप से गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु नदी घाटियों में डॉल्फिनों की अनुमानित संख्या 6,327 है। भारत में दुनिया की 90 प्रतिशत डॉल्फिन गंगा नदी में पायी जाती है।

सर्वविदित है कि जलवायु परिवर्तन के कारण नदियों में खारा पानी भी प्रवेश कर रहा है, जिससे ऐसे जलीय क्षेत्र डॉल्फिन जैसे जीवों के रहने के लिए अनुपयुक्त होते जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, ताजे पानी के प्रवाह में कमी और लवणता में वृद्धि के कारण सुंदरवन डेल्टा से ताजे पानी में पायी जाने वाली डॉल्फिन लुप्त हो रही है। गौरतलब है कि भारत का पहला राष्ट्रीय डॉल्फिन अनुसंधान केंद्र का उद्घाटन पटना में किया गया, जो गंगा डॉल्फिन के संरक्षण और अध्ययन के लिए समर्पित है।

वर्ष 2024 में, भारत ने प्रोजेक्ट डॉल्फिन के तहत असम में पहली बार गंगा नदी डॉल्फिन की सफलतापूर्वक सैटेलाइट-टैगिंग करने का लक्ष्य हासिल किया। गंगा नदी की डॉल्फिन भारत की राष्ट्रीय जलीय जीव है। इस जीव को गंगा नदी के स्वास्थ्य के प्रतिबिंब के रूप में देखा जाता है। डॉल्फिन को भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव वर्ष 2009 में घोषित किया गया। इसे इसकी

विशिष्टताओं के कारण असम राज्य का भी राजकीय जलीय जीव घोषित किया गया है। गंगा डॉल्फिन नदीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य के एक विश्वसनीय संकेतक के रूप में प्रमुख भूमिका निभाती है। इसके निवास स्थान की बात की जाए तो यह भौगोलिक रूप से भारत, नेपाल और बांग्लादेश के गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना और कर्णफुली-सांगू नदी की प्रणालियों में पाई जाती है। गंगा नदी बेसिन में हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि वे मुख्य धारा और सहायक नदियों जैसे घाघरा, कोसी, गंडक, चंबल, रूपनारायण तथा यमुना में मौजूद हैं।

लेकिन वर्तमान में यह प्रजाति अपने अधिकांश प्रारंभिक निवास स्थान से विलुप्त हो चुकी है। स्वच्छ जल में रहने वाली यह प्रजाति दृष्टिहीन होती है और अपने शिकार का पता लगाने के लिए अल्ट्रासोनिक इकोलोकेशन पर निर्भर करती हैं। सामान्यतः यह अकेली या छोटी-छोटी समूहों में पाई जाती हैं। गंगा नदी डॉल्फिन केवल मीठे जल स्रोतों में ही रह सकती हैं, मादाएँ नर से आकार में बड़ी होती हैं और प्रत्येक दो से तीन वर्ष में केवल एक बार शिशु को जन्म देती हैं। स्तनपायी होने के कारण गंगा नदी डॉल्फिन जल में साँस नहीं ले सकती है और उसे प्रत्येक 30-120 सेकंड में सतह पर आना पड़ता है। भारत में अनुमानित 3,000 गंगा डॉल्फिन में से लगभग आधी बिहार में पाई जाती हैं।

बिहार राज्य के मुंगेर से लेकर भागलपुर व झारखंड के साहिबगंज से पश्चिम बंगाल के फरक्का तक फैली गंगा, गंगा डॉल्फिन के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है। डॉल्फिन के संरक्षण के लिए विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य सुल्तानगंज से कहलगाँव तक गंगा नदी के 60 किमी लंबे क्षेत्र में फैला हुआ है और यह सन् 1991 से लुप्तप्राय डॉल्फिनों के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल है। यह पर्यटन के लिए नौका विहार के



माध्यम से डॉल्फिन को देखने का शानदार अनुभव प्रदान करता है। इसमें डॉल्फिनों के अलावा घड़ियाल और विभिन्न पक्षियों सहित कई जलीय वन्यजीवों को भी देखा जा सकता है।

जल प्रदूषण, बांधों के कारण प्रवाह में कमी और मछली पकड़ने के जाल डॉल्फिनों के लिए मुख्य खतरे हैं, जिससे इनकी संख्या घट रही है। वर्ष 1957 के बाद से गंगा डॉल्फिन की जनसंख्या में 50 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है, तथा जनसंख्या में 25 प्रतिशत की कमी आई है। गंगा डॉल्फिन के लिये संरक्षण कार्य योजना प्रोजेक्ट डॉल्फिन के नाम से चलाई जा रही है। इसे राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण द्वारा तैयार किया गया है, जिसमें डॉल्फिन के लिए आवास संरक्षण, सामुदायिक भागीदारी और मानव - डॉल्फिन संघर्ष के शमन के लिये विशिष्ट कार्यों का विवरण दिया गया था। इस योजना में डॉल्फिन की आबादी और उसके जीवन



संबंधी संकटों का आकलन करने के लिए सर्वेक्षण करना तथा स्थानीय समुदायों में डॉल्फिन के प्रति जागरूकता बढ़ाना शामिल है। भारत द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय डॉल्फिन अनुसंधान केंद्र लुप्तप्राय गंगा नदी डॉल्फिन के संरक्षण प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

करुणा सागर (पृष्ठ 4 का शेषांश)

से टकरा गई। रात के तीन बजे दूसरी बार अपने वार्ड में राउंड देते समय अचानक एक बुजुर्ग रोगी की हालत बिगड़ने लगी थी। उनकी सांसें उखड़ने लगी थीं। वे कुछ कहना चाहते थे, पर कह नहीं पा रहे थे। मैंने तुरंत उन्हें सीपीआर देकर उनकी जान बचा ली। वार्ड बॉय सुबह वार्ड के बरामदे के एक कोने में बोरी की तरह सिमटकर चादर में लिपटा सो रहा था।

कुछ दिनों बाद दोपहर 14.00 बजे से रात 21.00 बजे तक की ड्यूटी के दौरान रिटायर्ड एपीओ मिस्टर एस. के. सोलंकी ने अपने इकलौते पुत्र सागर से मेरा परिचय कराते हुए कहा- 'कलकत्ता यूनिवर्सिटी में एंथ्रोपोलॉजी का प्रोफेसर है मेरा बेटा सागर।' 'बेटा ! यह वही नर्स हैं जिन्होंने उस रात मेरी जान बचाई थी।' सागर साहब ने मेरे प्रति अपनी कृतज्ञता हाथ जोड़कर प्रकट की थी। मिस्टर सोलंकी को मेरा व्यवहार और सेवाभाव इतना अच्छा लगा कि उन्होंने मुझे अपनी पुत्रवधू बनाने का निर्णय ले लिया और इस तरह करुणा को करुणा के सागर मिले।

आज आपसे विदा होते हुए सिर्फ दो शब्द कहना चाहती हूँ - 'थैंक यू' और 'सॉरी'। धन्यवाद इसलिए कि आप जैसे अत्युत्तम लोगों के साथ मुझे कार्य करने का मौका मिला। सॉरी इसलिए कि जाने-अनजाने में यदि मेरी किसी बात का किसी को कभी भी बुरा लगा हो तो प्लीज उसे दिल में मत रखिएगा।' एक बार ऑडिटोरियम फिर तालियों से गूंज उठा। संचालक ने प्रोफेसर साहब को मंच पर आमंत्रित किया जो पहली बार अस्पताल आए थे, अपनी अर्धांगिनी के विदाई समारोह में शामिल होने के लिए। तालियों की गड़गड़ाहट प्रोफेसर सागर के स्वागत में और तेज हो गई थी।

सात साल पहले की इस घटना को याद करते हुए उमाशंकर झा, नर्सिंग अधिकारी के क्रोनोलॉजिकल बोर्ड पर लिखे अपने मेंटर करुणा सागर के नाम को देख रहे थे। उस बोर्ड पर नर्सिंग अधिकारी के रूप में अब उनका नाम लिखा जाएगा जो मुख्यालय केन्द्रीय अस्पताल के इतिहास में पहले पुरुष नर्सिंग अधिकारी बने थे।



अति सर्वदा वर्जते

शिवांश त्रिपाठी
आश्रित-श्री विनोद कुमार त्रिपाठी
सेवानिवृत्त वरि. अनु./लिलुआ

दुनिया में एक कहावत है 'अति सर्वदा वर्जते' अति-अधिकतम, सर्वदा-हमेशा, वर्जते- त्यागना अर्थात् किसी भी काम में अधिकता को त्यागना चाहिए। किसी भी काम में अधिकता हमेशा नुकसानदेह होती है। किसी भी काम की अधिकता होने से मनुष्य के लिए वह चीज लत-आदत बन जाती है और बड़े-बुजुर्ग कहते हैं- आदत मनुष्य के साथ ही जाती है।

दुनिया में आज हर इंसान को किसी न किसी चीज की आदत, या कहिए तो नशा है। किसी को यश कमाने, किसी को पैसे कमाने का नशा है, किसी को नाम कमाने का नशा है, कोई सम्मान कमाना चाहता है तो कोई सोहरत के पीछे भागता है। इन्हीं में से कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कुछ पाने के लिए गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। जिसके चलते इंसान अपनी जिंदगी बरबाद कर देता है। सही और गलत का भेद नहीं रख पाता है।

किसी शहर में एक छोटा-सा परिवार रहता था। उस परिवार में एक बच्चा था। उसके पिता छोटी-सी नौकरी कर घर का गुजर-बसर किया करते थे। घर थोड़े मुश्किल से चलता था, पर घर में बहुत ही खुशहाली का वातावरण था। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। समय बीता पढ़ाई भी समाप्त हुई और वह एक बड़े अधिकारी के पद पर नौकरी पा गया। फिर क्या था, दिन ही बदल गये। सब हसरतें पूरी होने लगीं, हर ख्वाब को मानों दिन का इंतजार होता। बड़े शहर में अपना बंगला, अपनी गाड़ी, हर ऐशो-आराम को अपने कदमों में रखा करता था। इसी प्रकार दिन बीतता गया। पैसों का घमंड इतना कि किसी को अपने सामने कुछ न समझने का अहम् आने लगा। उसी समय उसे अपने दोस्तों के बीच कभी-कभी शराब पीने की आदत-सी होने लगी थी। पत्नी की लड़ाई, बच्चों की नाखुशी और घरवालों के मना करने के कारण वह बाहर से ही पीकर आया करता था। धीरे-धीरे इस आदत ने घर में रोज-रोज के कलह का रूप धारण कर लिया।

एक दिन पत्नी ने ठोस कदम उठाने का फैसला किया। पति जब दफ्तर के लिए निकलने वाला था तभी पत्नी बोली, 'आज अगर तुम शराब पीकर आते हो तो

घर के किसी भी सदस्य को देख नहीं पाओगे।' पति दफ्तर गया, दिनभर उसके दिमाग में पत्नी की बात चलती रही। वह दिनभर सोचता रहा, मैं इतना धन-दौलत किसके लिए कमाता हूं, अगर घर वाले ही नहीं रहे तो यह सब किस काम का रहेगा। यही सोचकर वह फैसला करता है कि आज चाहे कुछ भी हो जाये मैं शराब को हाथ भी नहीं लगाऊंगा। शाम हुई घर की ओर चला। रास्ते में ही वह बियर बार था जहां वह रोज जाया करता था। वह रास्ते से ही उस तरफ देखा और मन ही मन बोला आज नहीं जाना है। कुछ दूर और आगे गया फिर देखा और फिर मन-ही-मन सोचा आज कुछ भी हो जाये आज नहीं जाना है। कुछ दूर और आगे गया फिर सोचा, आज कौन-कौन आया है यह तो पता ही नहीं चला, पीऊंगा नहीं पर एक बार जाकर देख लेता हूं कि कौन-कौन आज आया है। यह सोचकर वह गाड़ी पीछे मुड़वाता है। जाकर अपने दोस्तों को देखता है, सबने उसे पीने के लिए कहा लेकिन वह आज निश्चय कर चुका था कि आज कुछ भी हो जाए, नहीं पीना है तो नहीं पीना है। बस! वापस घर की तरफ जाता है, कुछ दूर जाकर यह सोचता है और बहुत खुश होता है कि आज बियर बार के सामने से आया, फिर वहां जाकर वापस भी आ गया मगर जो निश्चय कर रखा था उसे पूरा किया। अपने चालक से कहता है आज मैं बहुत खुश हूं कि मैंने कुछ सोचा, उसे पूरा भी किया। यह सोचते हुए कुछ दूर गया फिर चालक से बोला, चलो इसी बात पर तुम्हें एक आलीशान दावत देता हूं। गाड़ी होटल की ओर ले लो। वहां पहुंचकर बोलता है जिसे जितना पीना है मेरी तरफ से सब कोई पीओ आज मैं बहुत खुश हूं। दावत खत्म होती है, वह घर जाता है। घर पहुंचकर देखता है, घर में आग लगी हुई है। सब कुछ जलकर राख हो रहा है। खड़ा होकर बस देखता है और रोता है। राख को हाथ में लेकर दिनभर रोता रहता है फिर दिन ढल जाता है, शाम होती है। वह सोचता है अब किसलिए जीना, किसके सहारे जीना- एक शराब ही तो अपना बचा है। इस प्रकार अति से उसका अंत हो गया। आदतें मनुष्य के साथ ही जाती हैं। बुरी संगत का अंत भी बुरा ही होता है।



भारतीय रेलवे

मुकेश कुमार

वरिष्ठ लिपिक, इंजीनियरिंग, पूर्व रेलवे

16 अप्रैल, 1853 का दिन भारत के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन था। इसी दिन भारत में रेल सेवा की शुरुआत मुम्बई से थाने के बीच हुई थी। तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि आनेवाले दिनों में भारतीय रेल विश्व में परिवहन/परिचालन में अपना दूसरा स्थान बना लेगी, लेकिन यह आज का सच है। तब से लेकर अब तक भारतीय रेलवे ने बहुत तेजी से प्रगति की है और इस समय यह एशिया की सबसे बड़ी व विश्व की दूसरी सबसे बड़ी रेल प्रणाली है।

भारतीय रेल अंतर्राष्ट्रीय रेल नेटवर्क स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर भारतीय रेल पिछले कुछ वर्षों से न केवल अपने देश में रेल डिब्बे और इंजन के निर्माण में आत्मनिर्भर बनी है, बल्कि यह अन्य देशों को इसकी आपूर्ति भी करती है। आज देशभर में रेलों का व्यापक जाल बिछा हुआ है।

भारतीय रेलवे में कई प्रकार की रेलगाड़ियाँ हैं। मेल एवं एक्सप्रेस रेलगाड़ियों के अतिरिक्त, पर्यटन के लिए विशेष रेलगाड़ियाँ भी चलाई जाती हैं। पैसेंजर रेलगाड़ियाँ महानगरों की जीवन-रेखा का कार्य करती हैं। भारतीय रेलवे समय-समय पर विशेष प्रकार की रेलगाड़ियों का परिचालन भी करवाती है। भारत में कुछ अति विशिष्ट रेलगाड़ियाँ हैं, जो अपनी विशेषता के लिए विश्वभर के पर्यटकों के आकर्षक का केंद्र बनी हुई हैं। इनमें डेक्कन ओडिसी, पैलेस ऑन व्हील्स, हेरिटेज ऑन व्हील्स, महाराजा एक्सप्रेस, गोल्डन चैरियट, फेयरी क्वीन, हाई स्पीड बुलेट ट्रेन एवं रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स नामक रेलगाड़ियाँ शामिल हैं।

भारतीय रेल अपने यात्रियों को विविध प्रकार की

सुविधाएँ प्रदान करती है। इनमें वे सुविधाएँ भी सम्मिलित हैं, जो हमारे दैनिक जीवन से संबंधित होती हैं, जैसे- भोजन, जलपान, विश्राम गृह, अमानती सामान घर, हवील चेयर, प्राथमिक उपचार, बुक स्टॉल आदि। भारतीय रेल में लंबी दूरी की यात्राओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी रहती है ताकि यात्रीगण चिंतामुक्त होकर आरामदायक यात्रा का आनंद ले सकें।

रेल यात्रा के दौरान कई बार यात्रियों को लूटपाट, हिंसा का भी सामना करना पड़ता है। इन स्थितियों से निपटने के लिए भारतीय रेलवे ने रेलवे पुलिस बल की व्यवस्था कर रखी है, जो ऐसी स्थितियों से निपटने में पूरी तरह सक्षम हैं। रेलवे पुलिस द्वारा यथासम्भव प्रयास किया जाता है कि यात्रियों को यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति का सामना न करना पड़े। इन सभी सुविधाओं को देखते हुए रेलगाड़ी से बेहतर यात्रा का कोई अन्य विकल्प प्रतीत नहीं होता।

देश के कोने-कोने तक लोगों को आपस में जोड़ने के अतिरिक्त इसने व्यापार, पर्यटन एवं शिक्षा को भी सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसकी सहायता से कृषि एवं औद्योगिक विकास को भी गति प्राप्त हुई है। आजादी के बाद से भारतीय रेल ने अनंत उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। कवि हरिवंशराय बच्चन की ये पंक्तियाँ भारतीय रेल पर बिलकुल सही प्रतीत होती हैं-

“रुके न तू, थमे न तू
झुके न तू, थमे न तू
सदा चले, थके न तू
रुके न तू, झुके न तू।”

हिंदी के द्वारा भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती



सर्वोत्कृष्ट करियर : बाबा बनना

प्रभाष कुमार

वरि. सेक्शन इंजी., वरि. मं.यां.इंजी.(डी.), जमालपुर

बहुत दिनों से मैं परेशान था। छोटी-मोटी नौकरी करते और लिखते हुए बरसों बीत गये। देश में चारों ओर करियर की भरमार है। कोई आईएएस, आईपीएस, आईएफएस को लुभावना समझ रहा है। कोई इंजीनियरिंग पर दांव लगा रहा है तो कोई मेडिकल को गले लगा रहा है। कोई विदेश जाकर रिसर्च करने को सौभाग्य मानता है और कोई आईआईएम कर लाखों का पैकेज पाना चाहता है, पर मुझे यह सब ठीक नहीं लगता।

कहते हैं कि जो सबसे समझदार लोग हैं, वे साइंस लेते हैं। उससे कम समझदार लोग कॉमर्स लेते हैं। उससे कम समझदार लोग आर्ट्स लेते हैं। उससे कम समझदार स्कूलिंग ही करते हैं।

सबसे ज्यादा समझदार लोग साइंस लेते हैं। ये लोग बी.टेक./एम.टेक (इंजीनियरिंग), एम.बी.बी.एस./एम.डी. (मेडिकल) की पढ़ाई करते हैं। जो लोग कॉमर्स लेते हैं वे बी.कॉम., एम.कॉम., सी.ए., सी.एस. के बाद एमबीए करते हैं। एमबीए के अधीन बी.टेक., एम.टेक. वाले काम करते हैं। जो लोग आर्ट्स लेते हैं, वे लोग सिविल सर्विसेज़ में जाते हैं। उनके अधीन एमबीए काम करते हैं, उनके अधीन बी.टेक. काम करते हैं। जो लोग सिर्फ स्कूलिंग किए होते हैं, वे पॉलिटेक्निक बनते हैं। उनके अंदर में आईएएस/एमबीए/बी.टेक. काम करते हैं और निहायती चालाक लोग तथाकथित बाबा बनते हैं। उनके अंदर में पॉलिटेक्निक काम करते हैं, आईएएस काम करते हैं, एमबीए काम करते हैं, बी.टेक. काम करते हैं। इस प्रकार, बाबा बनना सौभाग्य की बात है।

मैं चाहता हूँ कि करियर ऐसा हो जिसमें मेहनत भी कम लगे और फायदा भी करोड़ों का हो। लाख चिंतन करने के बाद सामने आया कि देश में सर्वश्रेष्ठ करियर बाबा बनने में है। बाबागीरी से बेहतर कोई विकल्प नहीं है। वाकई भारत बाबाओं का देश है। यहां के कण-कण में बाबा विद्यमान हैं। सुबह से लेकर शाम तक नाना प्रकार के चैनलों पर भाँति-भाँति के बाबा अवतरित होते रहते हैं। रिमोट का कोई भी बटन दबाएं, परिणामस्वरूप एक नए बाबा का प्राकट्य होता है।

इसमें बाबा का भी कोई दोष नहीं है। बेचारे बाबा भी क्या करें। भारतीय व्यक्ति है ही बला का धार्मिक। प्रायः

एक भारतीय व्यक्ति के नस-नस में धार्मिकता कूट-कूट कर भरी होती है जो अक्सर किसी न किसी बाबा की चुम्बकत्व शक्ति रूपी रडार के अधीन काम करती है। वह सुबह बाबाओं के चरण चांपकर निकलता है और उनके आशीर्वादस्वरूप शाम को रिश्वत से भरी जेब लिए लौटता है। वह सुबह बाबा का आशीर्वाद लेकर खाद्यान्नों आदि में मिलावट करता है और उनके भलीभाँति खप जाने पर शाम में प्रसाद चढ़ाता है। एक आदमी का जीवन बाबा के बिना अधूरा-सा है। उसका जन्म उन्हीं के आशीर्वाद से होता है। उसकी बीमारी, चिन्ता आदि का निवारण वही करते हैं, दवाइयां व डॉक्टर तो एक बहाना है। वह बाबा के आशीर्वाद से कक्षाएं पास करता है। फिर शादी, नौकरी और प्रमोशन भी उन्हीं के आशीर्वाद से पाता है।

भारतीय व्यक्ति की इसी महान धार्मिकता के कारण बाबाओं का अनवरत विकास हो रहा है। पहले बेचारे कवि का इस मुहावरे पर कॉपीराइट बना हुआ था कि 'जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि'। परन्तु, अब इसका पेटेंट बाबाओं ने ले लिया है। अब वे हर जगह दिखते हैं। वे कभी फिल्मी कलाकारों को योग कराते हैं तो कभी खिलाड़ियों को सफलता के टिप्स देते दिखायी देते हैं।

राजनेताओं के साथ तो उनका चोली दामन का साथ है। राजनेता अनवरत सत्तासुख का आशीर्वाद पाने के लिए बाबा की चरणवंदना करते हैं। न जाने कितने अधिकारी और धन्ना सेठ बाबाओं के दरवाजे पर लाइन लगाकर खड़े होते हैं। अब तो बाबाओं को सत्ता की ओर बढ़ते देखकर मुझे लगता है कि वाकई बाबा बनना ही सर्वश्रेष्ठ है। एक व्यक्ति सफल बाबा बन जाए तो उसकी सात पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है। सफल बाबा का सफल प्रबंधन उसे परम सत्ता की ऊँचाइयों की ओर ले जाता है। सो आजकल मैंने योग सीखने के लिए क्लास ज्वाइन कर ली है।

घरवालों को सामने बिठाकर उपदेश देता रहता हूँ। घरवालों को उम्मीद है कि सफल बाबा बनते ही हमारे दिन फिर जायेंगे। इसलिए बस निरन्तर मेहनत कर रहा हूँ, आगे-आगे देखिये होता है क्या ?

नोट : यह रचना विशुद्ध मनोरंजन (व्यंग्य) के उद्देश्य से लिखी गई है। कृपया इसे अन्यथा न लिया जाए।

पूर्व रेलवे द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की चित्र-वीथिका



पूर्व रेलवे द्वारा आयोजित हिंदी नाट्योत्सव की झलकियाँ

